HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

# मातृवन्दना

श्रावण-भाद्रपद, युगाब्द 5121, अगस्त 2019

## स्वतंत्रता आन्दोलन
## में अपना हिमाचल

₹20/- प्रति

# अपना आज नशे में न उड़ाएँ,
# अपना कल सुरक्षित बनाएँ।

# – ठान लें –

## जीवन को कहें हाँ
## नशे को कहें ना

हम और आप मिलकर बदल सकते हैं तस्वीर
और ला सकते हैं सबके जीवन में
खुशहाली और सुख – समृद्धि।

**आईए प्रण लें, न नशा करेंगे
और न ही करने देंगे।**

**जयराम ठाकुर**
मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा जारी

वर्ष: 19 अंक : 08 | श्रावण-भाद्रपद, कलियुगाब्द 5121, अगस्त, 2019

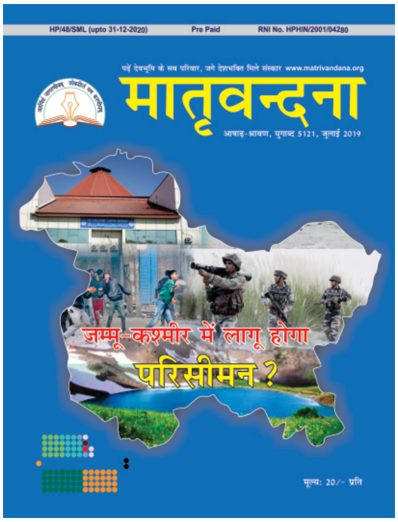


**सम्पादक**

डॉ. दयानन्द शर्मा

**सह-सम्पादक**

वासुदेव शर्मा

**सम्पादक मण्डल**

दलेल सिंह ठाकुर
मीनाक्षी सूद
नीतू वर्मा
डॉ. अर्चना गुलेरिया

**पत्रिका प्रमुख**

शांति स्वरुप

**वितरण प्रमुख**

जय सिंह ठाकुर

**कार्यालय:**

मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-4, दूरभाष: 0177-2836990

E-mail: matrivandanashimla@gmail.com,
Web.: www.matrivandana.org

**प्रकाशक एवं मुद्रक:** कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सविता प्रैस, प्लॉट नं. 820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित। **सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।**

| | |
|---|---|
| मासिक शुल्क | ₹20 |
| वार्षिक शुल्क | ₹100 |
| आजीवन शुल्क | ₹1000 |

**वैधानिक सूचना:** पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

*स्वतन्त्रता में हिमाचल की अविस्मरणीय भूमिका* 5
*हिमालय रियासती प्रजामण्डल* 6
*व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन* 7
*आजाद हिन्द फौज के हिमाचली जांबाज* 8
*कुल्लू के वीरों का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान* 11
*बाबा कांशी राम की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना* 13
*स्वतंत्रता आंदोलन में ऊना का योगदान* 15
*जल संकट और उसका समाधान* 16
*एक बड़े गृह युद्ध की आहट* 17
*नेहरू-शेख अब्दुल्ला और कश्मीर* 19
*मैं रहूं या न रहूं भारत यह रहना होगा* 20
*कारगिल शौर्य गाथा के बीस वर्ष* 22
*किसानों की आय हेतु पालेकर खेती कारगर* 24
*2022 तक पूर्णत: प्राकृतिक खेती राज्य* 24
*सपनों का घर* 27
*कलयुग में भी चन्द्रमा पर जाने वाला प्रथम देश भारत* 28
*तन्त्र* 30
*प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम व रजवाड़ाशाही का अंत* 32

# पाठकीय

**संपादक महोदय,**

भारत मे कुछ बुद्धिजीवियों द्वारा प्रधानमंत्री के नाम असहिष्णुता को लेकर खुला पत्र लिखा है, जिसमे दलित व अल्पसंख्यकों के प्रति उन्मादी भीड़ की हिंसा पर हस्तक्षेप की मांग की गई है। इन बुद्धिजीवियों में फिल्म जगत के अभिनेता, अभिनेत्री, फिल्मकार, सामाजिक कार्यकर्ता, इतिहासकार आदि शामिल हैं, जो बहुत ही सोच समझ कर सलेक्टिव बयान देते हैं। इन्हें लगता है जय श्रीराम के उद्घोष से मॉब लिंचिंग की घटनाएं हो रही हैं। लिहाजा 2016 की तर्ज पर अवार्ड वापसी तथा असहिष्णुता गैंग सक्रिय हो गई है। सवाल ये उठता है कि इन तथाकथित बुद्धिजीवियों ने लोक सभा चुनावों के दौरान बंगाल में हुई अप्रत्याशित हिंसा पर वहां की मुख्यमंत्री को पत्र क्यों नही लिखा। नक्सल हमले में सैकड़ों लोग मारे जाते हैं तब ये लोग कहां छुप जाते हैं। कश्मीर में हिंसा होती है तब इनकी कलम क्यों नही चलती। केरल में पुजारी की लिंचिंग, अंकित सक्सेना, डॉ. नारंग, विनय, रवि, चंदन गुप्ता, पेड़ पर टांग दिए गए, महतो के साथ हुई लिंचिंग में भी ये खामोश क्यों रहे। 1991 में कश्मीरी पंडितों के साथ हुई मॉब लिंचींग पर पत्र क्यों नहीं लिखे जाते। 1984 में सिख विरोधी दंगों में सैकड़ों हत्याएं हुई तब ये असहिष्णु गैंग कहां थी? किसी भी तरह की घटना के लिए हिंदुओं को ही जिम्मेदार ठहराया जाना सोची समझी साजिश है। इससे साफ जाहिर होता है कि इसमें भारत तथा यहां के प्रधानमंत्री की वैश्विक लोकप्रियता को धूमिल करने का प्रयास ज्यादा लग रहा है। हालांकि किसी भी प्रकार की हिंसा को उचित नहीं ठहराया जा सकता लिहाजा माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने मॉब लिंचिंग को जघन्य अपराध माना है तथा केंद्र सरकार को इसकी रोकथाम के लिए कानून बनाने के निर्देश भी दिए गए हैं, परन्तु न्यायालय द्वारा इसे कभी भी असहिष्णुता करार नहीं दिया गया। कमोबेश इस अभियान में सिर्फ हिंदुओं को बदनाम करना तथा देश की वैश्विक स्तर पर असहिष्णु छवि परोसने की मंशा ज्यादा लगती है◆◆◆ **सुदर्शना ठाकुर, औट, मण्डी**

**महोदय,**

ट्रिपल तलाक अब अपराध की श्रेणी में आ जाएगा। लोकसभा के साथ- साथ राज्यसभा ने भी मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण विधोयक को पास कर दिया है। राष्ट्रपति की मुहर के साथ यह बिल कानून बन जाएगा। यह बिल शाहबानो से लेकर सायरबानो तक के संघर्ष की कहानी है। शाहबानो 1986 में तुष्टिकरण की राजनीति की शिकार हुई थी और सायरबानो को वर्ष 2015 में उसके पति ने स्पीड पोस्ट के माध्यम से तलाक दिया था। वोटों की राजनीति करने वाले नेताओं की ओछी मानसिकता पर एक करारी चोट हुई है। आज महिलाएं जीवन के किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं है। ऐसे में मुस्लिम महिलाओं से मजहबी परम्पराओं के नाम से उत्पीड़न किसी भी सभ्य समाज के लिए सही नहीं कहा जा सकता । उन्हें अपनी सामाजिक परम्पराओं को निभाते हुए आगे बढ़ने के अधिकार मिलने चाहिए। समुदाय विशेष की धार्मिक आस्थाओं के चलते महिलाओं से भेदभाव करना अच्छा नहीं है। तीन शब्द तलाक के जो एक हँसती खेलती महिला को एक जिंदा लाश में बदल दे , निश्चित रूप से अपराध के दायरे में लाने चाहिए। संसद दोनों सदनों ने बहुमत से इस कुप्रथा पर कुठाराघात किया है। सरकार के इस इरादे को एक सामाजिक परिवर्तन और बढ़ते भारत के रूप में देखा जा सकता है। तीन तलाक की अन्यायपूर्ण परम्परा अब इतिहास का हिस्सा बन कर रहने वाली है। ट्रिपल तलाक कानून महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा ऐसी उम्मीद की जा सकती है। इसके विरोध में दिखने वाले लोगों को भी समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए व मुद्दे के मर्म को समझते हुए मुस्लिम महिलाओं के हक के पक्ष में खड़ा होना ही चाहिए। ◆◆◆**जोगिन्द्र ठाकुर, भल्याणी, कुल्लू ( हि. प्र. )**

## अगस्त माह के शुभ मुहूर्त

| | | |
|---|---|---|
| 7, 8 | बुद्धवार | ( मूल में अति आवश्यकता में ) |
| 9 | शुक्रवार | उत्तराषाढ़ा |
| 10 | शनिवार | श्रवण |
| 13 | मंगलवार | उत्तरभाद्रपद |
| 15 | वीरवार | रेवती |
| 19 | सोमवार | रोहिणी |
| 28, 29 | बुद्धवार | हस्त |
| 29, 30 | वीरवार | चित्रा |
| 30, 31 | शुक्रवार | स्वाति |

**शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें**
0177-2836990, 7650000990
ई-मेलः matrivandanashimla@gmail.com

**सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को स्वतंत्रता दिवस व रक्षा बंधन उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं।**

## स्मरणीय दिवस ( अगस्त )

| | |
|---|---|
| हरियाली अमावस्या | 01 अगस्त |
| हरियाली तीज | 03 अगस्त |
| पवित्रा एकादशी | 11 अगस्त |
| ईद-उल-अधा | 12 अगस्त |
| स्वतन्त्रता दिवस | 15 अगस्त |
| रक्षा बन्धन | 15 अगस्त |
| पारसी नववर्ष नवरोज | 17 अगस्त |
| अजा एकादशी | 27 अगस्त |

# स्वतन्त्रता में हिमाचल की अविस्मरणीय भूमिका

इस संसार में स्वतन्त्रता से जीवन यापन करना समस्त प्राणियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। किन्तु यह भी सच्चाई है कि सदा सर्वत्र प्राणी अथवा समाज स्वतन्त्रता की अनुभूति प्राप्त नहीं कर सकता। चेतना एवं विवेक से परिपूर्ण मानव-जीवन के लिए स्वतन्त्रता यदि कल्पतरू है तो परतन्त्रता निश्चय से विष-बेल के समान है। देश काल और परिस्थितियों की अनुकूलता एवं प्रतिकूलता वास्तव में स्वतन्त्रता एवं परतन्त्रता की परिचायक है। विश्व के इतिहास पर यदि दृष्टि डालें तो समय-समय पर अधिकांश देशों की संप्रभुता पर संकट के बादल छाते रहे हैं। हमारा देश भी उससे अछूता नहीं रहा। वह देश जिसे विश्व-गुरू का सम्मान प्राप्त था, जिसने अपना स्वर्णिम युग देखा था, शनैः-शनैः विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा कमजोर कर दिया गया। राज्यों की पारस्परिक एकता को विखण्डित कर विदेशी-ताकतों ने यहां अपना आधिपत्य स्थापित कर दिया। मुगल शासकों ने लगभग पूरे देश को ही गुलाम करने की सोची थी। अनन्तर अंग्रेजी हकूमत ने भारतीय जन-मानस को पूर्णतया असहाय एवं कुण्ठित कर दिया। समय सर्वशक्तिमान है। 1857 में भारतीय जन मानस में नवचेतना का संचार हुआ। परिणाम स्वरूप अंग्रेजों के विरूद्ध प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम हुआ किन्तु सभी घटकों में एकता एवं सामंजस्य न रहने के कारण यह क्रान्ति विफल हुई, तथापि जन-जन के हृदय में स्वतन्त्रता की लौ जल चुकी थी। दूसरी ओर सुभाष चन्द्र बोस, शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे अनेकों क्रान्तिकारी अंग्रेजी सत्ता को सीधे ललकार कर स्वयं को स्वतन्त्रता की बलि वेदी पर न्यौछावर करने को तत्पर दिखाई दे रहे थे और अपने देश को अंग्रेजों के चंगुल से छुड़ाने का भरसक प्रयास कर रहे थे।

1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के पश्चात् जनाक्रोश बढ़ता जा रहा था। हिमाचल में भी राजनैतिक चेतना का विकास दिखाई देने लगा था। छोटी-बड़ी रियासतों में बंटे हिमाचल-वासी अंग्रेजों के पिठ्ठु राजाओं से अपने अधिकारों की मांग करने लगे थे, साथ ही उनके अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठाने लगे थे। 1859 में बुशहर रियासत के दूम्ह आन्दोलन, 1862 में सुकेत रियासत का जनान्दोलन और 1878 में बगावत, नालागढ़ का जनान्दोलन, बिलासपुर में 1883 का झुग्गा सत्याग्रह, 1895 में चम्बा का किसान आन्दोलन, ये सभी आन्दोलन इस बात के परिचायक थे कि जनता अब अंग्रेजों तथा राजा-राणाओं की गुलामी से मुक्त होना चाहती है। रॉथनी कैसल में रहने वाले ए0ओ0हयूम ने कांग्रेस के गठन का आगाज उस समय की अंग्रेजों की ग्रीष्मकालीन राजधानी शिमला से किया था। हिमाचल की जनता ने महात्मा गांधी के सत्याग्रह आन्दोलन और भारत छोड़ो आन्दोलन में खुलकर भाग लिया। असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी हिमाचल वासियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग ले रहे कई हिमाचल के जवान शहीद हुए। आजाद हिन्द फौज में हिमाचल के 4000 से अधिक सैनिक तथा अफसर युद्ध मोर्चों पर वीरता से लड़े थे। दिसम्बर 1938 में शिमला में हिमालय रियासती प्रजामण्डल की स्थापना हुई। अनन्तर प्रदेश की अधिकांश रियासतों में प्रजामण्डल गठित हुए। इन्हीं प्रजामण्डलों के माध्यम से 15 अगस्त 1947 के अंग्रेजों तथा रियासती राज से हिमाचल की आम जनता ने मुक्त होकर स्वतन्त्रता की सांस ली। स्वतन्त्रता-दिवस के उपलक्ष्य पर मातृवन्दना द्वारा स्वतन्त्रता की पृष्ठभूमि को आधार मानकर हिमाचल वासियों की स्वतन्त्रता प्राप्ति में क्या भूमिका रही विषय पर यह विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

आज हम स्वतन्त्र भारत के नागरिक हैं। यह स्वतन्त्रता तभी स्थायी रह सकती है, यदि हम राष्ट्र निष्ठ होंगे, राष्ट्रहित में ही कर्म एवं कर्तव्य-पालन करते हुए आगे बढ़ेंगे। समस्त समाज का निर्माण करते हुए सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों का सम्मान करेंगे। हम सद्भावना एवं परस्पर ऐक्य भाव रखते हुए प्रदेश को सशक्त और सुदृढ़ बना सकते हैं। सत्ता का दुरूपयोग न हो, राजनीति में नकारात्मकता का अभाव हो, भ्रष्टाचार, आतंकवाद नक्सलवाद से देश मुक्त हो, समानरूप से सबका विकास हो, अन्तिम व्यक्ति तक सरकार की जनहित योजनाओं का लाभ पहुंचे, तभी बड़े गर्व से कह सकते हैं कि हम स्वतन्त्र भारत के नागरिक हैं।

# हिमालय रियासती प्रजामण्डल

दिसम्बर, 1938 ई0 में शिमला में 'हिमालय रियासती प्रजामण्डल' की स्थापना हुई। इस संस्था की स्थापना में टिहरी के देव सुमन, बुशहर के पं0 पदम देव और जुब्बल के भागमल सौहटा का विशेष योगदान रहा। हिमालय रियासती प्रजामण्डल में बुशहर से पं0 पदम देव, जुब्बल से भागमल सौहटा, टिहरी -गढ़वाल से देवसुमन, भज्जी से भास्करानन्द, बाघल से हीरा सिंह पाल, ठियोग से सूरत राम प्रकाश, मधान से देवी दास मुसाफिर, क्योंथल से देवी राम केवला और बिलासपुर से सदा राम चन्देल शामिल हुए। कालान्तर में थरोच से लच्छी राम, बघाट से बाबू शिवदत्त, बाघल से मन्सा राम चौहान, धामी से पं0 सीताराम, कुनिहार से गौरी शंकर तथा हरिदास, शांगरी से चिरंजी-लाल वर्मा और बघाट से ज्ञान चन्द टूटू ने भी इस संस्था की सदस्यता ग्रहण की।

अखिल भारतीय रियासती प्रजा परिषद् के सदस्य देव सुमन इस संस्था के उपदेशक बने। पं0 पदम देव को प्रधान और भागमल सौहटा को महामन्त्री मनोनीत किया गया। इस प्रकार पहाड़ी रियासतों का प्रथम संयुक्त केन्द्रीय संगठन बना। इस संगठन के विभिन्न पहाड़ी रियासतों की संस्थाओं और प्रजामण्डलों का एकीकरण किया और इनके नेताओं को एक मंच पर ला खड़ा किया। इससे सभी पहाड़ी रियासतों में योजनाबद्ध आन्दोलन आरम्भ हुआ और छोटी रियासतों के संगठनों एवं प्रजामण्डलों को केन्द्रीय संगठन का संरक्षण प्राप्त हुआ। हिमालय रियासती प्रजामण्डल के सदस्यों ने पहाड़ी रियासतों में प्रजा मण्डल की स्थापना का अभियान आरम्भ किया।

सन् 1939 का वर्ष सिरमौर रियासत में सरकारी दमन चक्र के साथ आरम्भ हुआ। रियासती सरकार ने प्रजा मण्डलों के दमन के लिए एक ब्रिटिश पुलिस अफसर, मिस्टर हइन को स्पेशल पुलिस सुपरिंटेन्डेंट नियुक्त किया और स्थानीय सिपाहियों के स्थान पर बलोच सिपाही भर्ती किए। प्रजा मण्डल के सदस्यों की सहायता करने के जुर्म में स्थानीय सुपरिंटेन्डेंट पुलिस कुंवर अजीत सिंह को नौकरी से निकाल दिया गया और सब-इन्स्पेक्टर जगत सिंह को नाहन से बदल कर देहरादून भेज दिया गया। रियासत भर में पांच से अधिक व्यक्तियों के एक स्थान पर एकत्रित होने तथा सभा करने पर पाबन्दी लगा दी गई। प्रमुख आन्दोलनकारियों के घरों पर पुलिस का पहरा लगा दिया गया और स्थान-स्थान पर संदिग्ध व्यक्तियों की छान-बीन करने के लिए पुलिस गार्द नियुक्त की गई। रियासत की सभी संस्थाओं और संगठनों पर 'रजिस्ट्रेशन ऑफ सोसाइटीज एक्ट' लागू कर दिया गया और इसके अन्तर्गत न आने वाली संस्थाओं को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया।

मार्च, 1939 ई0 में शिमला की पहाड़ी रियासतों में भी प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओं का दमन आरम्भ हुआ। कुमारसैन, घूंड, ठियोग, बलसन, भज्जी, जुब्बल, बाघल, बेजा, दरकोटी और क्योंथल के शासकों ने हिमालय रियासती प्रजामण्डल के नेताओं का अपनी रियासतों में आना बन्द कर दिया और स्थानीय कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार करना आरम्भ किया। पं0 पदमदेव, भागमल सौहटा, हीरासिंह पाल, भास्करानन्द, मन्सा राम चौहान और सूरतराम प्रकाश आदि पहाड़ी रियासतों में जाकर प्रजामण्डल का प्रचार करते रहे और उन्होंने प्रजा को रियासती सरकार के विरूद्ध आन्दोलन करने के लिए भी प्रेरित किया। उन्होंने पिछड़े वर्ग के लोगों को बेगार प्रथा का विरोध करने की सलाह दी और फलस्वरूप सारी पहाड़ी रियासतों में बेगार के विरूद्ध शिमला में पॉलिटिकल एजेन्ट को पेटीशन पेश की। पं0 पद्मदेव के नेतृत्व में पहाड़ी रियासतों के पिछड़े वर्ग ने इतिहास में पहली बार अपने राजा के आदेश का उल्लंघन किया और साहस जुटाकर सरकार के आर्थिक शोषण की नीति को चुनौति दी। इन दिनों गान्धी जी की शिष्या राजकुमारी अमृत कौर समरहिल, शिमला में रहती थी। राजकुमारी पहाड़ी रियासतों के आन्दोलनकारियों की प्रेरणा स्त्रोत औ पथ प्रदर्शक बनी। शांगरी के चिरंजीलाल वर्मा भी उनके शिष्य बने।

जून, 1939 ई0 में चम्बा रियासत में नागरिक अधिकार छीन लिए गए और संस्थाओं के गठन पर प्रतिबन्ध लग गया था। चम्बा लेखक संघ ने इस प्रकार प्रजा की आजादी पर लगे प्रतिबन्ध का घोर विरोध किया। फलस्वरूप, सदस्यों का दमन आरम्भ हुआ। गुलाम नबी और सौदागरमल के गिरफ्तार कर लिया गया। अन्य सदस्यों में से कुछ भूमिगत हो गए और कुछ डलहौजी में जाकर रियासती प्रजामण्डल के गठन औ प्रचार में जुट गए।

# व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन

... ✍

8 अगस्त, 1940 ई0 में महात्मा गांधी ने अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध राष्ट्रीय आन्दोलन की पूरी शक्ति लगाने की बजाए, 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' आन्दोलन चलाने का आदेश दिया। शिमला में हिमालय रियासती प्रजामण्डल के प्रधान, आर्य समाज के महामन्त्री तथा कांग्रेस के नेता पं0 पदम देव, शिमला जिला कांग्रेस के प्रधान श्याम लाल खन्ना और महामन्त्री सालिग राम शर्मा के नाम व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए स्वीकृत हुए। नवम्बर, 1940 ई0 को पं0 पदम देव ने गंज मैदान में सालिग राम शर्मा के साथ सत्याग्रह आरम्भ किया। पं0 पदम देव ने इस अवसर पर एकत्रित विशाल जनसभा को सम्बोधित किया और अन्त में 'भाई दो न पाई दो' का नारा लगाया। पुलिस हथकड़ी लेकर उन्हें गिरफ्तार करने मंच पर पहुंच गई। पदम देव को कैथू जेल ले जाया गया। बाद में 18 महीने की सजा काट कर वे लुधियाना और गुजरात की जेलों में बन्दी रहे। दूसरे सत्याग्रही सालिग राम शर्मा को दो वर्ष की कड़े कारावास की सजा देकर लुधियाना जेल में डाल दिया गया।

पं0 पदमदेव की अनुपस्थिति में हिमालय रियासती प्रजामण्डल तथा शिमला के प्रजामण्डल के प्रचार और आन्दोलन का नेतृत्व ज्ञान चन्द टूटू ने सम्भाला। ठियोग के सूरत राम प्रकाश, मधान के देवीदास मुसाफिर, बाघल के मन्साराम चौहान और भज्जी के भास्करानन्द ने भी पहाड़ी रियासतों में प्रजामण्डल आन्दोलन के संचालन में ज्ञान चन्द टूटू का साथ दिया। इसी दौरान शहीद भगतसिंह के छोटे भाई कुलवीर सिंह शिमला आए। उन्होंने शिमला में युवा आन्दोलनकारियों से भेंट की।

उसी काल में ठियोग के राजपरिवार से सम्बन्धित खड़क सिंह और उनकी सुपुत्री देववती ने रियासत के प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं को खुले रूप से समर्थन दिया और स्वयं देववती सक्रिय रूप से प्रजामण्डल के कार्यों में जुट गई। इसी वर्ष देवीराम केवला को रियासत क्योंथल से निष्कासित कर दिया गया और वे शिमला में हिमालय रियासती प्रजामण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता बन गए। नवम्बर, 1940 ई0 में कांगड़ा क्षेत्र में व्यक्तिगत सत्याग्रह के संचालन के लिए एक समिति बनाई गई। इस समिति ने ठाकुर हजारा सिंह, पं0 परस राम तथा ब्रह्मानन्द को सत्याग्रह का प्रभारी नियुक्त किया। यहां के नेता लाला मंगतराम खन्ना को प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही चुना गया।

दौलतपुर में ईशर दास और शंकर दास ने व्यक्तिगत सत्याग्रह आरम्भ किया, 'भाई दो ना पाई दो' का नारा बुलन्द किया और गिरफ्तारियां दीं। इस सत्याग्रह के दौरान कांगड़ा क्षेत्र में फौज में भर्ती होना हराम है, जंग के लिए चन्दा देना हराम है'- का नारा बहुत प्रसिद्ध हुआ। दिसम्बर 1940 ई0 में पं0 भगतराम ने धनोटू गांव में लाला हेमराज के व्यक्तिगत सत्याग्रह का आयोजन किया। लाला छगन राम, सरदार प्रीतम सिंह, दुर्गा दास सर्राफ, गिरधारी लाल सर्राफ आदि ने सत्याग्रह में शामिल कार्यकर्ता और प्रजा के लिए खुले लंगर लगाए। महिलाएं कौमी गीत गा-गा कर रोटियां बनाती रहीं। इस अवसर पर लाला हेमराज ने फौजी भर्ती के विरूद्ध भाषण दिया और प्रजा से अंग्रेजी सरकार का 'वार-फण्ड' युद्ध का चन्दा न देने की जोरदार अपील की। ज्यों ही उन्होंने 'भाई दो न पाई दो' का नारा बुलन्द किया- पुलिस उन पर झपट पड़ी और हेमराज को पकड़ कर शाहपुर पुलिस स्टेशन ले गई। सत्याग्रहियों ने मंगत राम खन्ना को 6 मास तथा हेमराज और अन्य सत्याग्रहियों को एक-एक वर्ष के कड़े कारावास की सजा देकर लायलपुर जेल भेज दिया गया।

सन् 1940 में मशोबरा के केशव राम, रामपुर-उना के जगदीश चन्द्र, महलोग के सीताराम, धर्मशाला के दौलतपुरी, देहरा के हेमराज, उना के तीर्थ राम, चम्बा के सौदागरमल ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में भागीदारी के अपराध में जेल की सजा पाई। इसी वर्ष कांगड़ा क्षेत्र में पुरूषों के साथ-साथ स्त्रियों ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भाग लेना आरम्भ किया। जिला कांग्रेस के सचिव पं0 परस राम की युवा धर्मपत्नी श्रीमती सरला शर्मा, बाबा कांशी राम की भतीजी-रामरखी और बद्राण की सुशीला ने कांगड़ा क्षेत्र में स्त्रियों में राजनैतिक जागृति पैदा करने का कार्य आरम्भ किया। शिमला में राजकुमारी अमृतकौर, ऊना के ओयल आश्रम में मीरा बेन और ठियोग में मियां सड़क सिंह की पुत्री देववती ने स्त्री-समाज में जागृति लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शिमला शहर में घर-घर और कांग्रेस के प्रमुख नेता डा0 नन्दलाल वर्मा, चौधरी दीवान चन्द, पं0 हरीराम, लाला गैंडा मल, सालिग्राम गुप्ता, सुल्तान अहमद, जनेश्वर लाल, द्वारिकाप्रसाद, रूपलाल मेहता, भागीरथ लाल अजीज आदि ने शिमला सपाटू, कसौली, कोटगढ़, कोटखाई और डगशाई के इलाके में ब्रिटिश सेना में भर्ती के खिलाफ़ प्रचार किया। फरवरी, 1941 ई0 में हिमाचल रियासती प्रजा मण्डल शिमला के नेता भागमल सौहटा ने व्यक्तिगत सत्याग्रह आरम्भ किया। उन्होंने भी गंज बाजार में भारी जनसभा को सम्बोधित करने के पश्चात् 'भाई दो न पाई दो' का नारा लगाया। पुलिस ने उन्हें उसी समय हिरासत में ले लिया और एक वर्ष के कड़े कारावास की सजा देकर मुलतान जेल में भेज दिया। उना क्षेत्र में फौजी भर्ती के खिलाफ जोरदार जन-अभियान चला। स्थानीय स्कूल के छात्रों ने 'वार-फंड' देने से इन्कार किया। बाबा लछमन दास आर्य के दो पुत्रों-सत्यमित्र एवं सत्यभूषण को

# आजाद हिन्द फौज के हिमाचली जांबाज

... ✍

21 अक्तूबर, 1943 ई0 को नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व सम्भाला। उसी दिन नेता जी ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति बनने के पश्चात् 'आजाद हिन्द सरकार' की स्थापना की और स्वयं इसके प्रेजीडेन्ट बने। जापानी सेना द्वारा अधिकार में लिए अण्डेमान-निकोबार द्वीप मे आजाद हिन्द सरकार स्थापित की गई। नेता जी ने इसके उपरान्त भारत की ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध आजादी की लड़ाई की घोषणा कर दी। सिंगापुर, बर्मा, थाईलैण्ड, मलाया, अण्डेमान-निकोबार, इटली, जापान, जर्मनी और फ्रांस में प्रशिक्षित आजाद हिन्द फौज के लगभग 3,50,000 सैनिकों ने नेता जी के आदेश पर भारत की आजादी के लिये मर-मिटने का प्रण लिया। गान्धी ब्रिगेड, नेहरू ब्रिगेड, आजाद ब्रिगेड, लक्ष्मीबाई ब्रिगेड, आदि के अन्तर्गत संगठित फौज में हिमाचल के लगभग 4000 जवानों ने इस सशस्त्र क्रान्ति में सक्रिय भाग लिया। आजाद हिन्द फौज की भारत को स्वतन्त्र कराने की इस महान लड़ाई में हिमाचल के तहसील देहरा के लैफ्टिनेंट कर्नल मेहर दास, धर्मशाला के मेजर दुर्गामल, ऊना के कैप्टन राम रत्न सिंह, नूरपुर के कैप्टन खुशीराम, इन्दौरा के कैप्टन चन्दा सिंह, बिलासपुर के कैप्टन सन्त सिंह आजाद, देहरी-नूरपुर के कैप्टन नानक सिंह, दाड़ी-धर्मशाला के कैप्टन दल बहादुर थापा, चढ़ियार-पालमपुर के कैप्टन बख्शी प्रताप सिंह, नूरपुर के कैप्टन रूमाल सिंह नेर चौक-मण्डी के कैप्टन अर्जुन सिंह राणा, सरकाघाट के कैप्टन बसन्त सिंह, थानेधार-शिमला के कैप्टन जयराम सिंह, कुनिहार के कैप्टन निक्कूराम, भोरंज के कैप्टन दुर्गा सिंह, बड़सर के कैप्टन प्रताप सिंह, सुजानपुर-टिहरा के कैप्टन अम्मी चन्द, मरहाणा बिलासपुर के कैप्टन शेर सिंह, बड़सर-हमीरपुर के कैप्टन आशा राम आदि ने अपनी-अपनी कमान का सफल नेतृत्व किया और आजाद हिन्द फौज की सशस्त्र क्रान्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसके अतिरिक्त त्रिलोकपुर-सिरमौर के लैफ्टिनेंट नारायण सिंह जसवाल, भोरंज के लैफ्टिनेंट दिला राम, हमीरपुर के लैफ्टिनेंट भागी सिंह, जोगिन्द्रनगर के लैफ्टिनेंट रूप चन्द, सरकाघाट के लैफ्टिनेंट बहादुर सिंह, नूरपुर के लैफ्टिनेंट भीम सिंह, पालमपुर के लैफ्टिनेंट सुख देव चौधरी, भोरंज के सैकिन्ड लैफ्टिनेंट शेर सिंह, टिक्कर-खरियां के सै0 लैफ्टिनेंट भगत राम, भोरंज के सै0 लैफ्टिनेंट बलवन्त सिंह, बड़सर के सै0 लैफ्टिनेंट दुर्गा दास, कटोह-मण्डी के सै0 लैफ्टिनेंट संत सिंह आजाद, नेरटी-कांगड़ा के सै0 लैफ्टिनेंट शक्ति चन्द, गोजू कांगड़ा के सै0 लैफ्टिनेंट रतन सिह आदि जूनियर अफसरों ने हजारों हिमाचली आजाद हिन्द फौज के जवानों के साथ आजादी की लड़ाई में बढ़-चढ़ कर भाग लिया और जान की कुर्बानी देने के लिए बराबर तत्पर रहे।

नेता जी के 'जयहिन्द' के नारे पर मर मिटने को तैयार पहाड़ी जवानों ने बर्मा, सिंगापुर और थाईलैंड के जंगलों में

◆◆◆

आजादी की लड़ाई की तैयारी आरम्भ की। आजाद हिन्द फौज की कौमी गीत–'कदम पे कदम बढ़ाये जा, खुशी के गीत गाये जा। ये जिन्दगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा।' इस गीत के संगीत निर्देशक घन्यारा कांगड़ा के आजाद हिन्द फौज सैनिक वीर राम सिंह ठाकुर थे। नेता जी के 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।' के नारे पर हमारे पर्वतीय क्षेत्र के आजाद हिन्दफौज की सशस्त्र क्रान्ति में कूद पड़े।

नेता जी ने 'चलो दिल्ली' का नारा देकर आजाद हिन्द के मतवाले सैनिकों का आगे बढ़ने का आदेश दिया। आजाद हिन्द फौज ने चिटगांव की सीमा पार कर नागालैंड और मणिपुर में प्रवेश किया और तीन महीने तक इम्फाल को घेर कर रखा। आजाद हिन्द सरकार की आजाद हिन्द फौज ने मणिपुर में मोइरंग नामक स्थान पर अपना प्रथम आजादी का झण्डा गाड़ा। इसी काल में आजाद हिन्द फौज की गुरिल्ला ब्रिगेड को नेता जी ने स्वयं अराकान युद्ध मोर्चे पर भेजा। इस 'बहादुर ग्रुप' के कमांडर देहरा–कांगड़ा के लैफ्टिनेंट कर्नल मेहर दास थे और 'सैकिन्ड–इन–कमांड' चढ़ियार–पालमपुर के कैप्टन बख्शी प्रताप सिंह थे। 5 फरवरी 1944 ई0 को 'बहादुर ग्रुप' के केवल 25 जवानों ने अंग्रेजी सेना के 700 से अधिक सैनिकों को पीछे धकेल दिया और उनकी सप्लाई और संचार व्यवस्था तोड़ डाली। दुश्मन की पांचवीं और सातवीं डिवीजन के कैम्प में छापा मार कर उनके गोपनीय कागजात और अन्य रिकॉर्ड छीने। कैप्टन बख्शी प्रताप सिंह ने इस धावे में एक सन्तरी और अंग्रेज अफसर को मार गिराया और स्वयं घायल होकर मिशन पूरा करके 'बेस कैम्प' में लौट आए। प्रथम मार्च, 1944 ई0 को राशन और असले की कमी के कारण इस बहादुर ग्रुप कमान को पीछे हटना पड़ा। अराकान के युद्ध मोर्चे पर सरकाघाट के हरिसिंह, हमीरपुर के अमर चन्द आदि पहाड़ी जवानों ने अद्भुत वीरता और युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया।

आजाद हिन्द फौज की इस आजादी की लड़ाई में देहरा के लैफ्टिनेंट कर्नल मेहर दास को 'सरदार–ए–जंग' की उपाधि से सम्मानित किया गया। चढ़ियार–पालमपुर के कैप्टन बख्शी प्रताप सिंह को 'तमगा–ए–शत्रुनाश' का खिताब मिला। हमीरपुर के लैफ्टिनेंट अमर चन्द को 'तमगा–ए–बहादुरी' का सम्मान प्रदान किया गया। उना के लैफ्टिनेंट सुखदेव चौधरी को 'वीर–ए–हिन्द' की उपाधि से सम्मानित किया गया और सरकाघाट के हरि सिंह को 'शेर–ए–हिन्द' का खिताब देकर सम्मानित किया गया। हिमाचल के लगभग 4000 जवानों ने इस लड़ाई में ब्रिटिश सेना का कड़ा मुकाबला किया और देश को आजाद कराने के लिये सैकड़ों जवानों ने वीरता से लड़ते हुए अपनी जानें कुर्बानी कर दी। 'जयहिन्द' के जयघोष के जोश में आजाद हिन्द फौज के क्रान्तिकारियों ने ब्रिटिश सेना के दांत खट्टे किये और आजादी की लड़ाई को जारी रखा। समस्त भारत में इस सशस्त्र क्रान्ति ने एक अद्भुत राष्ट्रवादी भावना को जन्म दिया। सारे भारत में 'जय हिन्द' का नारा अकस्मात् लोकप्रिय हुआ और छोटे–छोटे बच्चे भी टोलियों में आजाद हिन्द के कौमी गीत नित्य प्रति गली–कूचों में गाने लगे। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में लगभग 3,50,000 आजाद हिन्द फौज के जवानों ने इस सशस्त्र क्रान्ति में भाग लिया। देश के अन्दर भी क्रान्तिकारी संगठनों ने इस काल में अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियां तेज कर दी। इससे ब्रिटिश सरकार तिलमिला उठी।

◆◆◆

Dr. Hem Raj Sharma
Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU
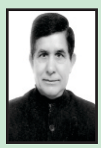
RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi
"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"
JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre
Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

UNITED ACCREDITATION FOUNDATION
UAF
TCCPL
TRANS CONTINENTAL CERTIFICATIONS PVT LTD
(ISO 9001:2015 certified)

# NCES

## Nuvision Commercial & Escort Services

Ashirwad Sadan, Mehli, Shimla (H.P.)

**M.: 09805408690, 09316678916**

Tel.; Fax.: 0177-2620690, E-mail: nuvisionchad@yahoo.com

> ❝ जंगे आजादी के शहीदों की गाथा आज सुनानी है
> बाहर तो क्या घर में भी जो अब तक रही अजानी है
> सन सतावन के गदर की ऐसी एक घटना सुनानी है। ❞

# कुल्लू के वीरों का स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान

... -हीरालाल ठाकुर

यह गाथा है उन वीरों की जिन्होंने 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह का बिगुल बजाया था और विदेशी हकुमत के खिलाफ संघर्ष पर कुल्लू का नाम भी उंचा किया था। कवि के शब्दों में यह महत्वपूर्ण घटना आज तक नई पीढ़ी तो क्या पुरानी पीढ़ी के लिए भी अजानी रही है। इस लेख में यह प्रयत्न किया गया है कि इस गौरवमयी इतिहाससिक घटना से आम जनता का अवगत करवाया जाए।

प्रताप सिंह का जन्म सन् 1821 में कुल्लू तहसील के बदाह गांव में हुआ था। जब सोभाराम बजीर ने किशन सिंह के पिता पर हमला किया तो उनकी रानी अपने को बचाते-2 मायके रजैहड़ या झलैड़ चली गई। वहीं प्रताप सिंह का लालन पालन हुआ। उसका ठीक रूप से लालन पालन न कर पाने के कारण रानी ने अपने पुत्र को राजा संसार चन्द को सौंप दिया और उनकी देख-रेख में प्रताप सिंह एक सुन्दर और बलिष्ठ युवक बना। जब राजा रणजीत सिंह सन् 1828 में ज्वालामुखी माता के दर्शन करने आया था उन्होंने उसके हृष्ट पुष्ट शरीर को देखते हुए राजा संसार चन्द से इस युवक का परिचय मांगा और साथ ले जाने की इच्छा जाहिर की। राजा संसार चन्द ने उसे रणजीत सिंह को सौंप दिया। सन् 1845-46 की अलहीवाल की लड़ाई में प्रतापसिंह अंग्रेजों के विरूद्ध सिक्खों की ओर से लड़ा भी था तथा घायल हुआ था। अंग्रेजों ने सोचा कि प्रतापसिंह लड़ाई में मारा गया है, पर वह सन 1856 में साधू के वेश में काईस गांव पहुंचा। वहां लोगों ने उसे पहचाना और अवसर की तलाश में था। 11.05.1857 को मेरठ का संग्राम हुआ। इन्होंने भी विद्रोह करने की ठानी। उसने अपने साले बीरचन्द को लेकर अपने क्षेत्र के नव युवकों को इकठ्ठा किया और एक सशस्त्र क्रान्ति की योजना बनाई। उसके लिए उसने नेगियों, प्रधानों तथा कारदारों आदि को गुप्त रूप से संदेश भेजने आरम्भ किए। मैदानों में भी संग्राम की चिंगारी सुलग रही थी। प्रतापसिंह ने भी अपनी मातृभूमि को विदेशी पंजे से छुड़ाने के लिए योजना बनानी आरम्भ कर दी। प्रताप सिंह ने सिराज क्षेत्र, लाहौल-स्पिति, बीड़-भंगाल तथा पूरे कुल्लू क्षेत्र में चिट्ठियां भेजीं। 16 मई 1857 को सिराज क्षेत्र के प्रमुख लोगों की एक गुप्त बैठक भी की। कैप्टन 'हे' जो उस समय कुल्लू में सहायक आयुक्त था और बाद में जिलाधीश शिमला रहा, ने इन क्रान्तिकारियों पर कड़ी नजर रखने के आदेश जारी किए थे। पलाईच के तहसीलदार को, जो उस समय बजांर तहसील का मुख्यालय था, को कुछ देशद्रोहियों ने चिट्ठियों व मीटिंग की जानकारी दी। तहसीलदार ने सहायक आयुक्त 'हे' को सूचना भेजी। उधर प्रताप सिंह व उसके व उसके साथियों को भी इसकी खबर लग गई। उन्होंने खुली बगावत की घोषणा कर दी। समय की कमी के कारण वे जन साधारण को इस आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित नहीं कर सके। फिर भी कुछ चुनिंदा जवानों के साथ उन्होंने अंग्रेजी सेना के साथ भिड़ंत की। सहायक आयुक्त 'हे' ने एक और भारी दस्ता बंजार भेजा। इस दस्ते का ये क्रान्तिकारी सामना नहीं कर सके और भाग गए। वे दुचली 'कांढी जोत' में 20 साथियों सहित पकड़े गए। प्रताप सिंह, बीरचन्द व उनके सहयोगियों सरदूल, कांशीराम, थूला, केशव राम, सूरत राम, तथा देवी दत्त आदि को पकड़ लिया गया और धर्मशाला 'भागसू जेल' भेज दिया गया। वे 2 महीने तक जेल में रहे। अंग्रेज सरकार ने इस जंगे आजादी को राज्य के विरूद्ध अपराध घोषित कर प्रतापसिंह व उसके सहयोगियों पर मुक्कदमा चलाया। तत्कालीन जिलाधीश कांगड़ा मि0 आर.सी. टेलर की अध्यक्षता में तथा दो अन्य सहायक आयुक्तों की देखरेख में मुकदमा चलाया गया तथा तीन दिनों तक सुनवाई चलती रही। उन्हें राजद्रोह के अपराध में फांसी की सजा सुनाई गई । 3 अगस्त 1857 को सांय 4 बजे प्रतापसिंह व बीरचंद को धर्मशाला 'परेड ग्राउंड' आजकल जो पुलिस मैदान हैं, में फांसी दी गई। प्रतापसिंह की मां भी वहीं मौजूद थी। सन् सत्तावन के संग्राम के नायकों प्रताप सिंह, बीरचन्द व उनके साथियों की कुर्बानी के लिए हर कुल्लू वासी श्रद्धा व आदर से हमेशा उनके प्रति नतमस्तक रहेगा। ◆◆◆

शिमला के होटल होलिडे होम में नारद जयंती के अवसर पर विश्व संवाद केन्द्र शिमला द्वारा प्रकाशित हिमसंचार विशेषांक का विमोचन करते हुए पांचजन्य के पूर्व संपादक व राज्यसभा सदस्य तरूण विजय, कानून व शिक्षा मंत्री सुरेश भारद्वाज व अन्य

# नेरी में इतिहास पर मंथन

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी, जिला हमीरपुर में निदेशक मण्डल की बैठक का आयोजन माधव भवन के सभागार में किया गया। बैठक की अध्यक्षता संस्थान अध्यक्ष डॉ. विजय मोहन कुमार पुरी ने की। बैठक का संचालन शोध संस्थान महासचिव भूमि दत शर्मा ने किया। बैठक में संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा एवं भविष्य की योजनाओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई।

संस्थान के कार्यों को गति देने के लिए निदेशक मण्डल द्वारा महत्वपूर्ण निर्णय भी लिए गए जिनमें मुख्य रूप से संस्थान द्वारा नवम्बर मास में 'पश्चिमी हिमालय में ऋषि परम्परा'' विषय राष्ट्रीय परिसंवाद, महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ पर हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के सहयोग से परिसंवाद का आयोजन जलियांवाला बाग हत्याकांड के 100वीं वर्ष पर भाषा कला संस्कृति अकादमी के संयुक्त तत्वाधान में एक हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में संगोष्ठी व महाविद्यालय स्तर पर जिला किन्नौर, चम्बा व कुल्लू में भी जाने वाली संगोष्ठियों सम्मिलित है। किन्नौर जनजातीय सभ्यता, संस्कृत और इतिहास विषय पर राजकीय महाविद्यालय रिकांगपिओ में परिसंवाद का आयोजन किया गया। बैठक में डॉ. मोती राम शर्मा व श्रीमती गंगा देवी को शोध संस्थान के पुस्तकालय के प्रबन्धन का कार्य सौंपा गया।

प्रवीण कुमार भट्टी को संस्थान का कानूनी सलाहकार नियुक्त किया गया। संस्थान के समन्वयक एवं निदेशक चेतराम गर्ग ने कहा कि समाज हमारी ओर बड़ी आशा व विश्वास के साथ देख रहा है, अत: हमें पूरी लग्न से कार्य भी आगे बढ़ाना चाहिए। संस्थान अध्यक्ष डॉ. विजय मोहन कुमार पुरी ने कहा कि संस्थान के कार्य की कसौटी का आंकलन मुख्य रूप से दो पहियों पर टिका है, जिसमें इतिहास दिवाकर व प्रकाशन कार्य की गुणवत्ता है। अत: हमें और बड़ी सावधानी कार्य करने की आवश्यकता है। ◆◆◆

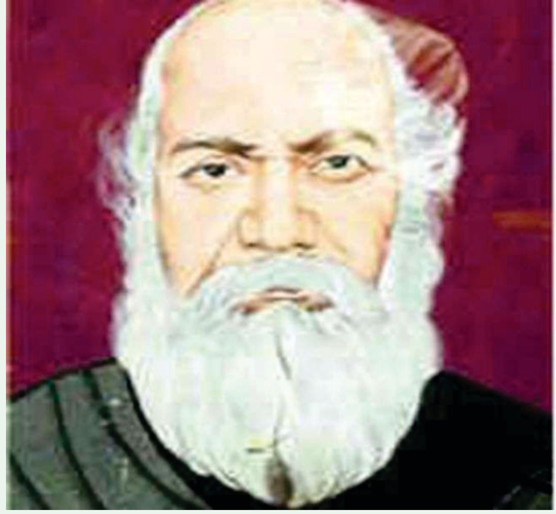

# बाबा कांशीराम
## की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना

...✍ - डा0 उमेश कुमार पाठक

आधुनिक युग में नये मूल्यों की स्थापना के साथ समाज का नया ढॉंचा तैयार हुआ है। वैसे संसार में प्राचीन के स्थान पर नवीन और नवीन के पुन: प्राचीन हो जाने की प्रक्रिया चलती रहती है। बात उन दिनों की है जब हमारे देश में परतंत्रता का संताप तो था ही पुनर्जागरण की चेतना तरंगें भी भारतीय जनमानस को आंदोलित कर रही थी और स्वाधीनता संग्राम अपना रूप ग्रहण कर रहा था। तद्नुरूप आदेर्शों एवं मूल्यों की प्रतिष्ठा हो रही थी। कोई भी सच्चा राष्ट्रभक्त अपने अतीत से नाता नहीं तोड़ सकता और न ही वह इतना भिन्न होता है कि अपने लोगों को उनकी कमियां गिना सके। आज हमारा देश बौद्धिक एवं नैतिक पुनर्जागरण की चौखट पर खड़ा है, ऐसे में चरित्र मात्र एक गुण नहीं बल्कि समाज व मनुष्य की समेकित उन्नति के लिए व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय चरित्र की आवश्यकता है। इस आलोक में बाबा कांशीराम केवल कांगड़ा जनपद ही नहीं, अपितु पूरे हिमाचल प्रदेश की उदात चेतना व रचनाशीलता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं।

बाबा कांशीराम का जन्म 11 जुलाई 1882 को डाडा-सीबा के गुरनबाड़ में हुआ था। उनके पिता का नाम लटानुराम था। रेवती देवी उनकी मां थीं। बालक कांशीराम महज ग्यारह साल के थे तभी उनके पिता का देहांत हो गया। इतना ही नहीं, नियति ने बालक कांशीराम से लगभग एक वर्ष बाद यानी कि 1894 ई0 में उनकी मां को छीन लिया। निश्चयत: इन घटनाओं का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। फिर भी अपनी दशा को उन्होंने कभी भी आत्मदया, आत्म कायरता अथवा आत्म संकोच का कारण नहीं बनने दिया। उनके माता-पिता ने अपने लिए जो संयम, अपरिग्रह और अनुशासन का जीवन चुना था, बाबा कांशीराम के बाल-मन पर उसकी बड़ी गहरी छाप पड़ी। राष्ट्रीय विचार धारा से परिचित कराने, राष्ट्रीय जागरण में जनता से शक्ति संचित करने, साहित्य लोक को राष्ट्रीय विचार धारा का संवाहन बनने, जन-जागरण में गोष्ठियों, आंदोलनों व संगठनों का कारगर माध्यम बनाने का जो मंत्र बाबा कांशीराम को संस्कार में मिला, बाद निरंतर उन्हें अभिप्रेरित करता रहा। उल्लेखनीय है कि अपने अस्तित्व के लिए चलने वाली पीढियां धीरे-धीरे विजय की ओर अग्रसर होती हैं, किंतु बाबा कांशीराम एक संवेदनशील व वैज्ञानिक सामाजिक, राष्ट्रीय चिंतन के फलस्वरूप धैर्य पूर्वक शोषण मुक्त सामाजिक व्यवस्था के लिए निर्णायक संघर्ष की तैयारी करते रहे-

'मैं कुण-कुण घराना मेरा
सारा हिन्दुस्तान ए मेरा।'

अंग्रेजों के खिलाफ बाबा कांशीराम का दृढ़ विश्वास था कि स्वाधीनता के लिए जन-जन का सुभाषित एवं सुसंस्कृत होना आवश्यक है, तथा उसे कोरी भावुकता से काम न लेकर हर निर्णय, हर भावुकता के साथ, विवेक के समन्वय से करना चाहिए। क्योंकि, मनुष्य राष्ट्र संस्कृति का उपयोग अपने जीवन को सहज, सार्थक एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए करता है। चूंकि, भारतीय सामाजिक चिंतन की एक व्यापक व मानवीय भूमिका अनेक आंदोलनों के मूल में दिखाई देती है, इसलिए बाबा कांशीराम ने पहाड़ी जन मानस को समग्र राष्ट्र के सामाजिक सुधार, धार्मिक सुधार और संस्कृति तथा लोक साहित्य से संबंधित सारे सुधारों को राष्ट्रीय चेतना से जोड़कर ब्रिटिश सता के विरूद्ध भारतीय स्वतंन्त्रता पर केन्द्रित करते हुए एक अत्यंत सफल व सार्थक आंदोलन के रूप में प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय अति उच्च, विराट व व्यापक भाव धारा है। राष्ट्रीयता की भावना में राष्ट्रीय चेतना के साथ अपने देश की सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना भी निहित होती है। राष्ट्रीयता मात्र विचार नहीं है। वह संवेदना एवं आचरण भी है। जो व्यक्ति अपने देश की परंपरा, देश की मिट्‌टी, प्रजा के सुख-दुख आदि से संवेदना और आचरण के स्तर पर जुड़ा नहीं होता, वह केवल देश की समस्याओं पर विचार कर सकने के कारण ही राष्ट्रीय नहीं कहा जा सकता। पराधीन राष्ट्र अतीत गौरव या अपनी उढ़ात को अभिव्यक्त करते हुए बाबा कांशीराम लिखते हैं-

***'भारत मां है मेरी माता***
***ओ जंजीरी जकड़ी ए।***
***ओ अंग्रेजो पकड़ी ए***
***उस नू आजाद कराणा ए।'***

बाबा कांशीराम जलियांवाला बाग हत्याकांड के उपरांत महात्मा गांधी के संदेशों को कविताओं व गीतों के माध्यम से पहाड़ी भाषा में निरंतर प्रसारित करते रहे। परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार के कोपभाजन का शिकार होकर स्वाधीनता आंदोलन के दौरान वे ग्यारह बार गिरफ्तार

हुए। इस प्रकार अपने जीवन के लगभग नौ वर्ष उन्होंने जेल में बिताए। इतना ही नहीं, उन्होंने संकल्प लिया कि 'जब तक भारतवर्ष आजाद नहीं हो जाता तब तक मैं काला वस्त्र ही धारण करूंगा। वर्ष 1937 ई0 में होशियारपुर के गद्धीवाला सम्मेलन में नेहरू जी इनकी रचनाओं से प्रभावित होकर 'पहाड़ी गांधी' से संबोधित किया। देश-धर्म और समाज पर बाबा कांशीराम ने अपनी चुटीली रचनाओं द्वारा गहन टिप्पणी की है जिनमें 'कुणाले री कहाणी' बाबा बालक नाथ कनै फरियाद, 'पहाड़ेया कनै चुगहा लियां' आदि प्रमुख हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय राष्ट्रीयता बहुत कुछ हिंदू जीवन दर्शन आधारित राष्ट्रवाद के रूप में दिखाई पड़ती है। इसका कारण सामाज हिंदू राष्ट्रवाद का प्रसार नहीं था, बल्कि उस समेकित दृष्टि का अभाव था जो गांधीजी के व्यक्तित्व से उभर कर आई। वे कहते हैं'

***'इक्को बार जमणा***
***देश बड़ा है कौम बड़ी है***
***जिन्द अमानत उस देश की***
***कुलजा मत्था टेकी कने, इंकलाब बुलाणा.....'***

पराधीन राष्ट्र की व्यथा, अंग्रेजी शासन के अत्याचार, स्वाधीनता सेनानियों के अदम्य उत्साह, कारागार ..... आदि का चित्रण बाबा कांशीराम ने अत्यंत मनोयोग से किया है। भारत मां की आजादी के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने का आहवान उनकी रचनाओं में सहज ही अनुधृत है

***भारत मां जो आजाद कराणे.......***
***मवां दे पुत्र चढ़े फांसियां,***
***हंसदे-हंसदे आजादी दे नारे लाई......***

दरअस्ल बाबा कांशीराम हर पंखुड़ी के विकास की बात दोहरायी है। उनकी कामना थी कि प्रत्येक मानव अपनी पूरी शक्ति से उठ खड़ा हो तथा अपने अधिकारों व कर्तव्यों को जाने। आजादी की मांग सर्वोपरि है। मानव मात्र की समानता व अवसर की समानता व्यक्ति को गोरे काले के भेद से ही मुक्ति नहीं देती बल्कि जाति, वर्ण, संप्रदाय आदि से मुक्त करती हुई व्यक्ति के चरम विकास का मौका भी प्रदान करती है। घोर निराशा व पराधीनता की घड़ी में ज्योति की तरह बापू की उपस्थिति ने बाबा कांशीराम के चिंतन को नई दिशा दी, नवजीवन दिया। मानव जीवन मूल्यों के प्रति आस्थावान व्यक्ति अपने व्यक्तिगत विकल्प को राष्ट्रीय संकल्प के सामने विसर्जित कर देता है। भारत मां की आजादी का सपना संजोये यह हिमाचली सपूत 15 अक्तूबर, 1943 को पंच तत्व में विलीन हो गया।

समवेतत: माननीय एवं राष्ट्रीय चेतना बाबा कांशीराम के व्यक्तित्व व कृतित्व की एक बड़ी संपति है। इंसानियत की न्यायिक व्यवस्था का आहवान करना ही उनके कालजयी होने का प्रमाण है। उन्होंने गांधीवादी चिंतन के उन्हीं सारभूत तत्वों को जीवन में अंतमुक्त किया जिससे मनुष्य और मनुष्यता का विकास होता है। अस्तु, बाबा कांशीराम का व्यक्तित्व हमारे लिए अनुकरणीय है, वंदनीय है। ◆◆◆


मातृवन्दना के पाठकों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

सौजन्य:

अजय पठानिया

Govt. Contractor, Kehanwal, Distt. Mandi (H.p.)

# स्वतंत्रता आंदोलन में ऊना का योगदान

... ✍ - डॉ. चमन लाल बंगा

ऊना जिला भारत के राज्यों में उत्तर की तरफ हिमाचल प्रदेश में स्थित है। उना का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। वर्तमान उना नवम्बर 1966 के पूर्व पंजाब के होशियारपुर जिला की एक तहसील थी। सितम्बर 1972 तक यहा कांगड़ा जिला की तहसील रही। उना जिला जसवां-दून रियासत के नाम से मशहूर था। जसवां-दून रियासत की नींव 1170 ई0 पूर्व में पूर्ण चन्द द्वारा रखी गई थी। जसंवा रियासत मूलत: एक राजा की जागीर थी जो मुस्लिम आक्रमणकारियों के समय स्वतन्त्र राज्य के रूप में उभरी, इसका कोई प्रमाण नहीं है। शिवालिक पहाड़ियों की मध्यवर्ती श्रृंखला में स्थित उना जिले का अपना समृद्ध एवं गौरवशाली इतिहास है। रियासत काल, मुगल काल और अंग्रेजों के शासन काल में ऊना क्षेत्र में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं।

19वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में कांगड़ा क्षेत्र की पहाडी रियासतों में महाराजा रणजीत सिंह द्वारा अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए राजनीतिक छल-बल द्वारा साम्राज्य स्थापित करने का बोल-बाला था। वर्ष 1839 में महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद वर्ष 1845 में सिक्खों का अंग्रेजों से युद्ध प्रारम्भ हो गया। वर्ष 1848 में भुट्टान में विद्रोह भड़कने से अंग्रेजों तथा सिक्खों के मध्य दूसरा युद्ध आरम्भ होने पर नूरपुर रियासत के पूर्व बजीर राम सिंह पठानिया के युवा पुत्र रामसिंह ने दूर-पार के सभी पहाड़ी राजाओं को एकत्रित कर लिया। जसवां के राजा उम्मेद सिंह तथा ऊना के सिक्ख गुरू विक्रम सिंह बेदी ने जसवां रियासत में हाजीपुर से रोपड़ तक विद्रोह की बिगुल बजाया। वर्ष 1905 के बंगाल विभाजन में वर्तमान ऊना जिला के धुसाड़ा गांव के क्रान्तिकारी नवयुवक रिखीकेश लटठ, जो पुलिस की नजरों में अपने अस्यकों भूमिगत किए हुए थे, सरदार अजीत सिंह एवं सूफी अम्बा प्रसाद से दिशा-निर्देश प्राप्त करने के उपरान्त वर्ष 1908 में कराची बन्दरगाह से जहाज में सवार होकर शिराज ईरान चले गए। ऊना के ही बाबा लछमन दास आर्य भी अंग्रेजी की पकड़ में नहीं आए। वर्ष 1917 में जिला होशियारपुर में कांग्रेस कमेटी का गहन हुआ। जिसके निर्देश पर रोलेट एक्ट के विरोध में 30 मार्च, 1919 को होशियारपुर एवं मुकेरियां में हड़ताल हुई। 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियांवाला बाग गोलीकांड में होशियारपुर के भी लोग जखमी हुए अथवा मारे गए थे। 30-31 अक्तूबर को शेख जान मोहम्मद रईस की अध्यक्षता में होशियारपुर में चार हजार लोगों का जिला स्तरीय सम्मेलन हुआ।

8 मार्च, 1921 को महात्मा गांधी व उनकी पत्नी श्रीमति कस्तूरबा गांधी भी होशियारपुर एवं कस्बा हरियाना में पधारे थे। उस समय आयोजित सभाम में 20 हजार लोगों ने हिस्सा लिया। इस सभा की अध्यक्षता जनबा सैयद हबीब ने की थी। 2 जुलाई, 1922 को सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समर्थन में उना क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। वर्ष 1922 से 1925 तक चिंतपूर्णी मंन्दिर के तालाब पर नवरात्र मेलों के दौरान राजनीतिक सम्मेलन होते रहे। वर्ष 1928 में साइमन कमीशन के विरोध में होशियारपुर, दसूआ, मुकेरियां, उना, दौलतपुर चौक, हरियाणा इत्यादि स्थानों पर प्रदर्शन हुए। 28 अप्रैल 1930 को होशियारपुर में नमक सत्याग्रह हुआ।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में उना जिला के सोहन सिंह चमक चौकी मनियार, बाबा लछमन दास आर्य उना, धनीराम दुलैहड़, अनन्तराम गग्रेट, जगदीश सिंह मलाहत, ठाकुर दास धर्मपुर, लक्ष्मण दास ओयल, ठाकुर वरपाम सिह दौलतपुर चौंक, वतन सिंह उना, सत्य प्रकाश अम्ब, खुशी नन्द पराशर अम्बोटा, लक्ष्मण दास बंगाणा, गोपी राम गुगलैहड़ गिरफ्तार हुए। 26 जनवरी 1931 को स्वाधीनता प्रतिज्ञा दिवस को हर्षोल्लास के साथ ऊना, शिववाड़ी अम्बोटा एवं दौलतपुर में मनाया गया।

वर्ष 1934 में ओयल के महाशय तीरथ राम ने जालन्धर में पिकैटिंग करने के अपराध में छ: माह की जेल मिली। अगस्त 1942 में शुरू हुए भारत छोड़ो आंदोलन से कुछ दिन पहले अम्ब में आयोजित एक राजनीतिक जलसे को डा. गोपीचन्द भार्गव ने सम्बोधित किया। भारत छोड़ो आन्दोलन के दृष्टिगत राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में दौलतपुर चौंक, ऑयल अम्ब एवं उना में विशाल जनसभाएं आयोजित हुई। महाशय तीर्थ राम ने इश्तहारों के माध्यम से सारे उना क्षेत्र में 'करो या मरो' ◆◆◆

... -चेतन कौशल

# जल संकट और उसका समाधान

हिंद भारत पाक विभाजन के पश्चात् बांग्लादेशी और रोहिंग्या शरणार्थी मुसलमानों का भारत में बहुत तेजी से आगमन हुआ है। मुसलमानों में बहु विवाह करने, अनेकों पत्नियां रखने और हर पत्नी से कई-कई बच्चे पैदा करने की परंपरा का आज भी प्रचलन जारी है। इस कारण छः-सात दशकों से देश के राज्यों में उनकी जनसंख्या बड़ी तीव्र गति से बढ़ी है, जब कि हिंदुओं की जनसंख्या में निरंतर कमी हुई है। इस तरह देश के कई राज्य जिनमें कभी हिंदू बहु-संख्यक थे, अल्प-संख्यक होते जा रहे हैं।

जन संख्या के बढ़ने, उचित मात्र में इमारती और फलदार पौध-रोपण न हो पाने, लोगों को रहने के लिए स्थान कम पड़ने के कारण सबके लिए मकान तथा सड़क निर्माण हेतु बारबार अनगिनत पेड़ों के कटने से जंगलों का वृत्त सिमटता रहा है। बहुत से जंगली जीव-जंतु लुप्त प्रायः हुए हैं अथवा लुप्त होने के कगार पर पहुंच गए हैं। इससे पर्यावरण में असंतुलन पनपा है। वन्य जीव जंतु व वन्य संपदा निरंतर अभाव की ओर अग्रसर है।

देशभर में तेजी से शहरीकरण और सड़कों का निर्माण होने के कारण धरती की सतह सीमेंट व तारकोल से ढकती जा रही है जिससे वर्षाजल का बहुत सा भाग किसी नाली, नाला या नदी में बेकार बह जाने से भूमि में प्रवेश नहीं कर पाता है। हां असंख्य नलकूपों से पानी अवश्य निकाला जाता है, पर कहीं कृत्रिम भूजल पुनर्भरण नहीं होता है। निर्माण कार्य हेतु खनिजों की आपूर्ति के लिए पहाड़, नदी, नालों से खनिजों का दिन-रात भारी मात्रा में खनन जारी है जिससे उनमें निरंतर गहराई बढ़ रही है। बदले में उंचाई वाले भूजल स्रोत प्रभावित हो रहे हैं और क्षेत्रीय जल संकट बढ़ रहा है।

धरती के तापमान में निरंतर वृद्धि होने से वर्षभर जल आपूर्ति करने वाले ग्लेशियर, हिम-नद दिनों-दिन पिघल ही नहीं रहे हैं, सिकुड़ भी रहे हैं। बारह मासी बहने वाली परंपरागत झीलें, झरनें, नदियां और नहरें जो देश के लिए जल आपूर्ति किया करती थीं, के जलस्तर में भारी कमी हो रही है। हर वर्ष गर्मी बढ़ने से प्राकृतिक जल स्रोत सूखते एवं सिकुड़ते जा रहे हैं।

ग्लेशियर, हिम-नद, नदियां और नहरें जैसे सतही जलस्रोत जो वर्षभर निरंतर प्रवाहित होते थे, उनसे तालाब, कूप डैम और नहरों का जलस्तर पर्याप्त मात्र में भरा रहता था। मानव के द्वारा आधुनिकता की अंधीदौड़ में पर्यावरण के साथ अनुचित छेड़-छाड़ करने से उसका सौंदर्य बिगड़ा है। आवश्यकता है प्राकृतिक जल स्रोतों का अस्तित्व बचाने की, उन्हें निरंतर सक्रिय बनाए रखने की। आज इनके अस्तित्व पर संकट के बादल छाने के पीछे मानव की महत्वाकांक्षा और पर्यावरण के प्रति उसकी उपेक्षा का हाथ स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। मनुष्य तीव्र गर्मी से राहत पाने के लिए जब-जब पहाड़ी क्षेत्रों के शीतल हरी-भरी बादियों, उनके रमणीय स्थलों की ओर भ्रमण करने निकलता है तो वह वापसी के दौरान वहां ढेरों गंदगी भी छोड़ आता है जो पर्यावरण के लिए बड़ी घातक सिद्ध होती है। निर्माण कार्य करने, जीव जंतुओं को पीने के लिए, साफ-सफाई रखने और खेत, पेड़-पौधों की सिंचाई करने के लिए शुद्ध सतही जल ही काम आता है। मनुष्य को प्राकृतिक जल स्रोतों के किनारों पर साफ-सफाई का धयान रखना, फलदार और इमारती लकड़ी की पौधा लगाना और उसके प्रति स्वयं जागरूक रहना अति आवश्यक है।

जन संख्या वृद्धि होने, प्रदूषण फैलने, जंगलों का वृत्त सिकुड़ने, वन्य संपदा में कमी आने, संतुलित वर्षा न हो पाने के कारण शुद्ध भूजल की मांग दिन प्रति-दिन बढ़ रही है और भूजल का अधिक मात्र में दोहन होने लगा है। परिणाम स्वरूप भूजल स्तर निरंतर गिर रहा है। ऐसे में - कूप-नलकूप, नल-हस्तचालित नल और बावड़ियां अपना-अपना अस्तित्व खो रहे हैं। सृष्टि में स्वच्छ जल की निरंतर हो रही कमी के कारण प्राणियों का जीवन संकटग्रस्त है।

हमें जल का उपयोग करने के लिए कठोर नियमों का पालन करना आवश्यक हो गया है। नल या भूजल का उपयोग समय पर और परिवार की आवश्यकता अनुसार करें। घर अथवा सार्वजनिक नल या भूजल पाइप कभी लीक न होनें दें। परिवार के सदस्य घर अथवा सार्वजनिक

स्थलों पर सदैव बाल्टी और मघ से ही स्नान करें। जूठे बर्तनों और घर की सफ़-सफ़ाई तथा कपड़ों की धुलाई सदा संग्रहित जल से ही करें। निर्माण कार्य हमेशा सतही जल-किसी झील, झरना, जलाशय, तालाब, कूप, नदी या नहर से ही करें। ऐसा करने से हमें भूजल बचाने में कुछ लम्बे और अधिक समय तक सहायता अवश्य मिल सकती है।

हमारा भारत मुख्यत: छ: ऋतुओं का देश है। उनमें वर्षा ऋतु का अपना ही महत्व है। आज देश भर में स्थिति ऐसी हो गई है कि कहीं वर्षा होती है तो कहीं होतीं नही है। वर्षा जहां होती है, वहां इतनी ज्यादा और भयानक होती है कि बाढ़ आ जाती है और वह अपने साथ जन, धान सब कुछ बहा कर ले जाती है। यह सब अचानक इतनी जल्दी होता है कि किसी को अपनी स्थिति संभालने का समय भी नहीं मिलता है। जलधारा सांय-सांय करती हुई नाली, नाला, नदी का रूप धारण कर पहाड़ से जंगल और मैदान की ओर बढ़ जाती है। वह पहाड़ से निकल कर जलाशय की ओर बहती है और फ़िर सागर से मिल कर एकाकार हो जाती है। उसे तो बस बहना है। वर्षा जल आंधीबन कर आता है और तफ़ूान बन कर आगे बढ़ जाता है। इस तरह वह तीव्रगामी जल-धारा धारती को विनाश के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं देती है। उससे कहीं भी भूजल पुनर्भरण नहीं होता है।

भूजल बैंक निरंतर खाली होता जा रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि हम भूजल बैंक से निरंतर अंधाधुंध जल दोहन किए जा रहे हैं पर उसमें कभी किस्त नहीं डालते हैं, कहीं भी जल संग्रहण करने का प्रयास नहीं करते हैं। हमें जलस्तर में वृद्धि करनी होगी। जल संचयन करने हेतु परंपरागत बावड़ी, कूप, तालाब, जलाशयों का संरक्षण एवं उनका नव निर्माण करना होगा। खेत का पानी खेत में रहे, उसे वहीं रोक कर, नदियों को स्वच्छ बनाकर, पर्यावरण का प्रदूषण भी हटाना होगा और सदाबहार नदी या नालों के जल को चैकडैम में बांधकर तथा हर घर की छत के वर्षाजल का पाइप द्वारा भूमि में कृत्रिम भूजल पुनर्भरण करना होगा। अपनी जन संख्या पर नियंत्र्ण रखना होगा। इसके साथ ही साथ हमें हर वर्षाकाल में अपने खेतों की मेड़ों पर तथा खाली पड़ी सरकारी तथा गैर सरकारी भूमि पर इमारती और फलदार पौधा लगानी होगी, वर्षभर उनका पोषण करना होगा ताकि भावी पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक जंगल और वन्य सम्पदा को लम्बे समय तक बचाया जा सके। मनवा प्यासी धरती करे पुकार, सुरक्षित भूजल भंडार सबका करे उद्धार। ◆◆◆

# एक बड़े गृह युद्ध की आहट

हवाओं की सनसनाहट अगर आप नहीं सुन पा रहे तो अपने कान का इलाज कराइये सबसे बड़ी बात- इस युद्ध में सबको पार्टीसिपेट करना पड़ेगा वो भी प्रत्यक्ष -अप्रत्यक्ष नहीं तटस्थ होने का तो सवाल ही नहीं, तटस्थ वो ही रह पाएगा जो या तो देश छोड़ के भाग जाए या दुनिया छोड़ के। आज जितने इमटे भीमटे, आमी वामी, आपिए सापिए, एकुलर सेकुलर जितने हैं सबको उस युद्ध का हिस्सा बनना पड़ेगा, चाह के भी भाग नहीं पाएगा कोई। अब मुसलमानों के बाहर बैठे आका ये अच्छी तरह समझ गये हैं कि भारत में सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन बहुत तेजी से हो रहा, राष्ट्रवादी ताकतों का बर्चस्व बहुत तेजी से बढ़ता जा रहा, राष्ट्र विरोधी तत्व दिन प्रतिदिन कमजोर होते जा रहे, बात एक राजनीतिक दल की नहीं है, आने वाले 10-20 सालों में हालात पूरी तरह बदल जाएंगे, विकल्प भी वही पार्टी बनेगी जिसकी नीतियां और बिचार दक्षिण पंथी हो। बाहर बैठे आका अब समझ गये हैं कि जितनी देर होगी उनका मत उतना ही कमजोर होता जाएगा भारत में, इसलिये बहुत जल्दी आशमानी किताब का हुक्म नाजिल होगा।

कश्मीर से इसका आगाज हो चुका, बंगाल केरल आसाम और बिहार, पश्चिमी यूपी, राजस्थान और एमपी के कुछ जिलों में बाकायदा इसकी तैयारी शुरु हो चुकी है छिटपुट और छोटा मोटा प्रयोग तो कफ़ी दिनो से चल रहे, पर अब बडा करने की तैयारी शुरु हो चुकी है। ऐसा नहीं की इंटेलिजेंस एजेन्सियों को इसकी खबर नहीं, वो तैयारी भी कर रहे और इसे फ्लॉप करने का प्रयास भी, पर ये समस्या ऐसी है जिसका कोई इलाज किसी भी देश में सरकारी स्तर पे सम्भव ही नहीं है (कुछेक अपवाद देश को छोड़ के)। भारत में तो बिल्कुल नहीं, इसका समाधान सिविल सोसाइटी स्तर पर ही हो सकता है और होगा भी।

तो हे सिक्युलरों अब तुम पर निर्भर है कि 1 लाख के मोबाइल फोन, 4 लाख का ज्ट, 3 लाख के डबल डोर वाले फ्रिज या महंगी कार खरीदते हो या फिर 25-50 हजार के हथियार। मुसलमान कभी महंगे गैजेट्स नहीं खरीदता वो या तो चुरा लेते हैं या फिर जैसे अफगानिस्तान का किस्सा पुराना हो गया कश्मीरी पंडित अपना कश्मीर छोड़ कर भागे थे और अगर कश्मीरी पंडित भी याद न हों तो कैराना मेरठ बंगाल देख लो।

जिन्हें यह लेख कपोल कल्पना लगता है उन के लिए हमारी हार्दिक शुभकामना...... अगर काल के कपाल पर लिखा हुआ सन्देश आप पढ़ सकते हैं तो फिर शेयर करके जागरूक कीजिये अपने सभी भाईयों को।◆◆◆ **साभार: INDIA SPEAKS DAILY के सौजन्य से**

समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

# R.K. TIMBERS

**Lunapani, Teh. Bal,**
**Distt. Mandi (H.P.)**

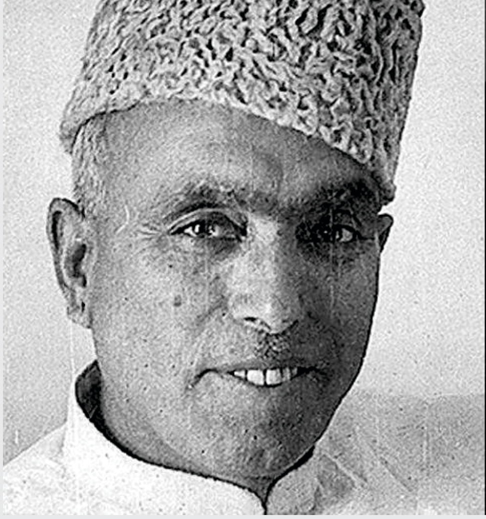

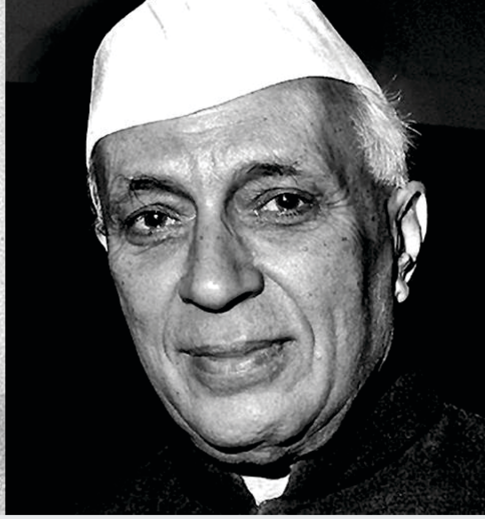

... -अजित गुप्ता

# नेहरू-शेख अब्दुल्ला और कश्मीर

किताबों के पन्ने पलटने का खेल बहुत खतरनाक है, वह भी इतिहास की किताबें। अब इतिहास तो तुम्हारे पुरखे ही लिख गये थे, तुम्हारे अपने लोग ही बता गये कि उनके काल में क्या घटा था! बस तुमने कभी पढ़ा नहीं और आज ये पढ़कर आ गये। जैसे-जैसे इतिहास के पन्ने पलटते गये, संसद में मौन पसरता गया। बेचारा आज मायूसी से घिरा था। एक कोने में अपने अधीर बाबू भी चुप लगाए बैठे थे। गाय-बछड़ा तो शायद जगंल की सैर पर गये थे। वैसे भी उन्हें भारत के इतिहास का पता नहीं, वे तो गाली देकर ही काम चलाया करते हैं तो भला ऐसी गम्भीर चर्चा के समय उनका काम भी नहीं था।

कश्मीर के इतिहास पर प्रकाश डाल रहे थे अपने अमित शाह, साथ में थे डॉ. जितेन्द्र। कश्मीर की बात आएगी तो नेहरू सबसे पहले आएंगे ही, शेख अबदुल्ला का नाम भी लिया ही जाएगा। कैसे नेहरू ने हरि सिंह के हस्ताक्षर के बाद भी कश्मीर को विवाद का विषय बना दिया, यह बात तो बढ़-चढ़कर आएगी ही। जिस शेख अब्दुल्ला को नेहरू ने 16 वर्ष तक कैद रखा, उसे पलक झपकते ही उनकी बेटी इन्दिरा ने कैद से मुक्त कर दिया और मुख्यमंत्री भी बना दिया। आज संसद में शोर मचा रहे थे कि जम्मू-कश्मीर में चुनाव क्यों नहीं करवाते? ये सोचते हैं कि लोकतंत्र के मायने कांग्रेस की जेब है, जब जेब से पर्चा निकाला और कभी फाड़ दिया और कभी अभय दे दिया। हमारे अमित भाई शाह ने बताया कि तुम्हारे नेहरू ने क्योंकर युद्ध विराम कराया था? तो हमारे नेता का नाम मत लो, नाम मत लो, का शोर मच गया। अभी दो दिन पहले ही शोर मचा था कि हमारे नेता का नाम क्यों नहीं लिया, क्यों नहीं लिया। भाई लोगों तय तो कर लो कि नेहरू का नाम लेना है या नहीं। देश का विभाजन नेहरू कराए, उसमें लाखों लोग का कत्ल हो जाए लेकिन नेहरू महान कहलाएं, यह तो अचम्भे की बात है। 563 रियासतों का भारत में विलीनीकरण सरदार पटेल कराए और कश्मीर नेहरू अपनी मुठ्ठी में रख ले फिर विवाद का विषय बना दे, लेकिन उनके वारिस कहें कि जिक्र मत करो, यह तो घोर अचम्भे की बात है।

नेहरू की वंशावली का देश में जिक्र ना हो, हम विवाह भी करते हैं तो सप्तपदी के समय पण्डित जी सात पीढ़ियों का नाम पूछते हैं लेकिन यहां देश का प्रधानमंत्री बना दिया जाता है और दो पीढ़ी का नाम भी पता नहीं! कैसे विश्वास कर लें हम कि तुमने और तुम्हारे नेहरू ने आजादी के समय ही कश्मीर का सौदा भी नहीं किया हो।

इतिहास के पन्नों की खुदाई होनी चाहिये, गम्भीरता से होनी चाहिये कि आखिर नेहरू कौन था और उसने क्या-क्या कारनामे किये थे? सुभाष बोस पर उनका व्यवहार संदेह के घेरे में हैं, आजादी के नाम पर बंटवारे का खेल संदेह के घेरे में है और कश्मीर का खेल संदेह के घेरे में है। ऐसे छोटे-मोटे अनेक खेल संदेह के घेरे में है। कैसे सरदार पटेल और राजेन्द्र बाबू जैसे विशाल व्यक्तित्व हमारे पास थे फिर भी नेहरू को देश सौंप दिया गया, इसकी गम्भीरता से पड़ताल होनी चाहिये। इन पांच सालों में देश के सामने दूध का दूध और पानी का पानी होना ही चाहिये। नेहरू के नाम पर संसद में शोर मचाने वालों को मुंहतोड़ जवाब देना चाहिये। आज देश गम्भीर साम्प्रदायिक तनाव से गुजर रहा है और यह तनाव धर्म के आधार पर विभाजन से उपजा है, आज प्रत्येक भारतीय संकट में घिरा है। यदि इन प्रश्नों के उत्तर शीघ्र देश के सामने नहीं आए तो देश को एक ओर कुरुक्षेत्र के लिये तैयार होना होगा क्योंकि इस बार बंटवारा नहीं होगा अपितु विलीनीकरण होगा। संसद में शोर मचा लिया, कामकाज ठप्प कर दिया, इससे अब काम नहीं चलेगा। नेहरू का इतिहास समग्रता से सामने लाना ही होगा।

खंगालनी पड़ेंगी फाइलें जिसमें दुरभिसंधियां चुपचाप पड़ी हैं क्योंकि प्रश्न केवल भारत को बचाने का नहीं है एक ऐसी संस्कृति को बचाने का है जिसने दुनिया को मानवता का पाठ पढ़ाया था। भारत कहां नहीं था, सम्पूर्ण दुनिया में इसके निशान मौजूद हैं अभी कुछ दिन पहले ही ईरान में श्रीराम की मुर्ती निकली है। जब से हमने भारतीय संस्कृति को मिटाने का प्रयास किया है तभी से आतंक और हिंसा का बोलबाला रहा है। इसलिये सच्चाई तो देश के सामने लानी ही होगी। इतिहास के पन्ने फड़फड़ा रहे हैं, बस इन्हें देश के सामने लाने की जरूरत है। ◆◆◆

# मैं रहूं या न रहूं
# भारत यह रहना होगा

... - सुरेन्द्र कुमार

देश से है प्यार, तो हर पल यह कहना होगा कि मैं रहूंया न रहूं, भारत यह रहना होगा।। जी हां! मशहूर गीतकार प्रसून जोशी द्वारा लिखित यह गीत कारगिल विजय के उन वीर सुपूतों के शौर्य और समर्पण को बखूबी चरितार्थ करता है जिन्होंने युद्ध में अदम्य साहस और पराक्रम का बेहतरीन परिचय देते हुए हजारों दुशमनों को मार कर अपनी जान गंवाई थी। वर्ष 1999 के इस युद्ध में देश को 527 शूरवीर सिपाही खोने पड़े थे। लेकिन अपनी शहादत से पूर्व इन पराक्रमी योद्धाओं ने दुश्मन मुल्क के कायर इरादों को बुरी तरह से धराशायी कर दिया था। उन्हीं की स्मृति में देश हर वर्ष 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस मनाता है। गत शुक्रवार भारत ने कारगिल विजय की 20वीं वर्षगांठ बड़े हर्षोल्लास से मनाई। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने जम्मू कश्मीर के द्रास पहुंच कर युद्ध के शहीदों को नमन किया जबकि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इंडिया गेट स्थित वार मेमोरियल जाकर उन शूरवीरों को श्रद्धांजलि अर्पित की। आज से बीस वर्ष पूर्व इसी दिन भारतीय रणबांकुरों ने कारगिल विजय गाथा लिखी थी।

आतंक के सरपरस्तों द्वारा शुरू की गई इस घुसपैठ को भारतीय सैनिकों ने 26 जुलाई 1999 को जब सिरे से खदेडा तो भारतीय जांबाजों के जज्बे को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वे दुश्मनों को दहाड़ कर कह रहे हो कि तेरी जंग मेरी जीत, तेरी कायरता मेरी सफलता और तेरा विश्वासघात मेरा आत्मविश्वास। क्योंकि अनेकों शाति पूर्ण वार्ताओं के बावजूद पाकिस्तान ने फरवरी 1999 से अपने सैनिकों को गुपचुप तरीके से नियंत्रण रेखा को लांघले को कहा था। भारत को पाक की इस नापाक हरकत का तब जरा भी आभास नहीं था। जबकि दुश्मन मुल्क पूरी तरह से नियंत्रण रेखा के आस पास युद्ध की बिसात बिछा रहा था। मई माह के शुरुआत में देश की सेना को दूशमन मुल्क से घुसे घुसपैठियों व सैनिकों की नीच करतूत का पता चला और जवाबी कार्रवाई के लिए कुछ जवानों को कारगिल की ओर रवाना किया। तब भी हमारी सेना को लग रहा था कि स्थिति वार्तालाप से सुलझ जाएगी। परंतु दुश्मन राष्ट्र के घुसपैठिए पूरी तरह से एक नियोजित रणनीति के तहत बड़ा हमला करने की फिराक में थे। तब जाकर भारत सरकार ने ऑपरेशन विजय के नाम से सीमा रेखा पर लगभग 02 लाख सैनिक तैनात किए तथा शेष सैनिकों को रेड सिग्नल पर ऑपरेशन को कवर करने के लिए मुस्तैद रखा।

दो माह तक दोनों ओर से बेतहाशा जवाबी कार्रवाई होती रही। लेकिन धीरे धीरे हमारे सक्षम जांबाजों ने अपनी काबिलियत का परिचय देते हुए विरोधी सैनिकों को टॉप से खदेड़ने में महारत हासिल की तथा विजय ऑपरेशन को सफलतापूर्वक अंतिम अंजाम तक पहुंचाने में दक्षता दिखाई। इस ऐतिहासिक जीत में देश के अनेकों लौह पुरुषों का बलिदान रहा। जिन्होंने अपनी जान की परवाह किए

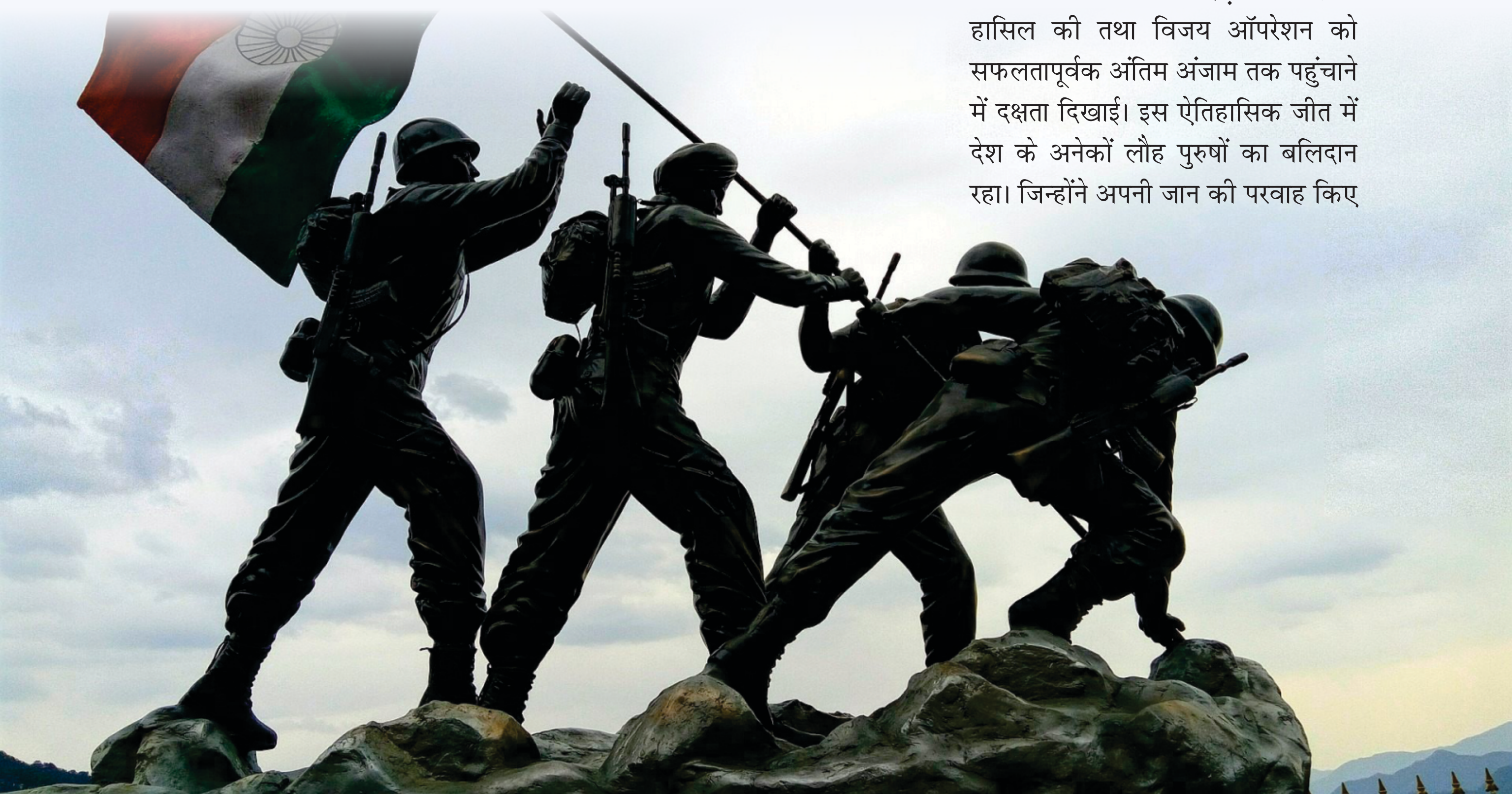

बगैर देश की आन को ठेस नहीं आने दी। वैसे तो कारगिल युद्ध में सैकड़ों भारतीय सैनिक वीर गति को प्राप्त हुए। परंतु युद्ध में बहुत से ऐसे साहसिक जांबाज थे जिन्होंने युद्ध के दौरान अपने आप को दर्जनों दुश्मन सैनिकों के बीच में अकेले पाया। बावजूद इसके वे निडरता के साथ इस तरह लड़े कि विरोधी उनके बुलंद हौसले के समक्ष बुरी तरह से तहस नहस हो गए।

कैप्टन सौरभ कालिया भी एक ऐसा ही नाम था। जो युद्ध के शुरुआती दिनों में ही दुश्मनों को धूल चटाते-चटाते इतने आगे निकल गए कि उन्हें वहां से पीछे हटना आसान नहीं था तथा ऐन मौके पर उनका बारूद भी खत्म हो गया। तब दुश्मनों ने सौरभ कालिया को पांच अन्य साथियों के साथ बंदी बनाया। बीस दिनों बाद जब घुसपैठियों ने इस साहसी योद्धा का शव भारत को सौंपा तो क्षत्-विक्षत् शरीर को पहचाना मुश्किल था। ऑटाप्सी रिपोर्ट से पता चला कि सौरभ से पाकिस्तानियों ने दानवीय बर्बरता बरती थी। उनके नाक में जलती सिगरेट और कान पर लोहे की सुलगती छड़ घुसेडी थी। इसी तरह कैप्टन विक्रम बत्रा एक ऐसा नाम जिसे सुनकर विरोधियों की रुह कांप उठती थीं। परिवारजन उन्हें लव तथा साथी सैनिक उन्हें शेर शाह नाम से पुकारते थे। कारगिल युद्ध के दौरान 20 जून को जब उन्होंने तड़के 03.30 बजे टाइगर चोटी को दुश्मन के कब्जे से छुड़ा कर रेडियो के जरिए अपना विजय उद्घोष 'ये दिल मांगे मोर' किया तो पूरा देश जांबाज विक्रम के इस संदेश को सुनकर देश भक्ति में डूब गया। अगली सुबह भारतीय सेना का यह शेर शाह अपनी टुकड़ी के साथ चोटी 4875 को फतह करने चढ़ाई चढ़ने लगा। यहांभी वह विरोधियों पर हर दम भारी ही पड़ रहे थे तभी दुश्मनों की एक गोली साथी अधिकारी पर लगी। कैप्टन विक्रम घायल अधिकारी को सहारा देने लगे कि गोलियों की बौछार उन पर बरस गई और वे स्वयं भी लहूलूहान हो गए। वे तब तक लड़ते रहे जब तक उनकी सांस चल रही थी। कारगिल युद्ध के कठिन मोर्चो में से एक खालूवाट मोर्चा था। जिसे फतह करने के लिए अदम्य साहस से ओत-प्रोत लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडेय ने कमर कसी। गोरखा राइफल 1/11 की अगुवाई करते हुए रणभूमि में तब तक लड़ते रहे जब तक उन्होंने अपने मिशन में जीत हासिल न हो गई।

दुश्मनों के कई ठिकानों को नेस्तनाबूत करने के दौरान एक गोली उनके सीने में धस गई वह फिर भी लड़ते रहे पर काल को यह मंजूर नहीं था और उन्हें वीर गति प्राप्त हुई। वे उम्र में भले ही अभी 24 वर्ष के थे पर इस छोटी सी आयु में कार्य उन्होंने किसी बडे योद्धा से कम नहीं किया था। कैप्टन विक्रम और लेफ्टिनेंट मनोज भारतीय सेना के दो ऐसे सुरमा थे जिनके अभिभूत प्रयासों को सरकार ने मरणोपरांत सेना के सर्वोच्च सम्मान परमवीर चक्र से सम्मानित किया। भारत का सर्वोच्च शौर्य सैन्य अलंकरण केवल उन चुनिंदा वीरों को दिया जाता है जो दुश्मनों की उपस्थिति में उच्च कोटि की शूरवीरता व त्याग दर्शाते हैं। यह देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न के बाद दूसरा सबसे प्रतिष्ठित सम्मान है। अब यदि राजपुताना राइफल के कैप्टन एन केगंर्सू की बात की जाए कि देश के इस रण बांकूरे की युद्ध लड़ने की क्षमता इतनी प्रभावी थी कि ये विरोधियों के अनेकों बंकरों को उड़ाने के बाद भी नही थका। विरोधियों के हौसलों को जमींनदोज करते करते कुछ गोलियां उन्हें भी धंस गई और उन्हें शहीद होना पड़ा। इसी प्रकार वीर जवान अनुज नायर के चर्चे भी कारगिल युद्ध के दौरान बखूबी गूंजते रहे। जाट रेजीमेंट-17 में तैनात इस जांबाज को जीवन के 22वें साल ही सबसे मुश्किल टारगेट मिल गया। इनका लक्ष्य पिपल टू नाम से मशहूर चोटी प्वांइट 4875 को दुश्मन के कब्जे से छुड़ाना था। अनुज ने साथियों के साथ अपने लक्ष्य की ओर कूच किया और बहुत जल्द नौ घुसपैठियों को मार गिराया। इस जांबाज की उम्र भले ही छोटी थी पर कार्य इन्होंने किसी बड़े योद्धा से कम नहीं किया। नौ दुश्मनों को मार गिराने के उपरांत अनुज ने विरोधियों की तीन मशीनगन भी ध्वस्त की। जबकि चौथे बंकर को उडाते वक्त एक बम उनके पैर पर आ गिरा और वे बुरी तरह से लहुलूहान हुए और वीर गति को प्राप्त हो गए। हम यहां केवल उन्हीं पराक्रमी सैनिकों का जिक्र कर रहे हैं जिन्होंने रणभूमि में एक वक्त अपने आप को अकेले विरोधियों के मध्य पाया। दुश्मनों से चारों ओर से घिरे होने पर भी उक्त अद्‌भुत साहसी सैनिकों के साहस में कमी नहीं आई और भारत माता की जय का उद्घोष करते हुए लड़ते रहे तथा अंततः वीर गति प्राप्त की। इसलिए इस सुअवसर पर इनका स्मरण करना अति आवश्यक हो जाता है। ◆◆◆

# कारगिल शौर्य गाथा के बीस वर्ष

...-प्रताप सिंह पटियाल

आजादी के बाद भारत व पाकिस्तान के बीच हुए चार बड़े युद्धों में इतिहास साक्षी रहा है कि जब भी पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान ने भारत की अस्मिता तथा भारतीय सेना के जमीर को ललकारा, हमारी सेना ने अपने पराक्रमी तेवरों से मुंहतोड़ जवाब देकर पाक सेना को उसकी औकाता दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। कारगिल युद्ध में भी पाक की नामुराद सेना का वही हश्र हुआ। भारतीय सेना के सामने शर्मनाक पराजय का दंश झेलकर उसे विश्व समुदाय के सामने लज्जित होना पड़ा। मई, 1999 यानी 20 वर्ष पूर्व पाक सेना ने अपना षड्यंत्रकारी चरित्र दिखाकर नियंत्रण रेखा पार करके कश्मीर में कारगिल के चारों उपखंडों के शिखरों पर घुसपैठ की साजिश को अंजाम देकर इन पर कब्जा कर लिया था। भारत व पाक के बीच मौजूद 740 किलोमीटर लंबी नियंत्रण रेखा, जिसकी गिनती दुनिया की सबसे खतरनाक सरहदों में होती है, उसमें कारगिल क्षेत्र लगभग 168 किलोमीटर तक फैला है। इस क्षेत्र में पाक सेना की बड़े पैमाने पर यह सुनियोजित घुसपैठ थी, जिसमें पाक सेना की 'नार्दन लाइट इन्फैंट्री' के नियमित सैनिकों के साथ पाक समर्थित भाड़े के आतंकी भी शामिल थे और इस बात का खुलासा खुद पाक सेना के पूर्व सैन्य अधिकारी रहे ले.ज. शाहिद अजीज अपनी चर्चित किताब 'यह खामोशी कब तक' में पूरी तफसील से बयान कर चुके हैं। कारगिल में घुसपैठ की भनक लगने के बाद पांच मई, 1999 को इस क्षेत्र में दुश्मन की पोजीशन का पता लगाने वाली भारतीय सेना के गश्ती दल का नेतृत्व कर रहे 23 वर्षीय कैप्टन सौरभ कालिया को अपने पांच जवानों सहित 22 दिनों तक पाक सेना की अमानवीय यातनाओं का शिकार होकर शहादत देनी पड़ी थी, जो कि जनेवा कनवेंशन 1949 का सरासर उल्लघंन था। कारगिल युद्ध शुरू होने से पहले ये हिमाचल के हिस्से पहली शहादत थी, जिसके घाव अभी तक जिंदा हैं।

पाक सेना की इस कायराना हरकत के बाद भारतीय सेना के प्रतिशोध की कोई सीमा नहीं रही। पाक सेना ने धोखे से कारगिल में घुसपैठ का दुस्साहस तो कर लिया, लेकिन भारतीय सेना के जांबाजों ने कारगिल को पाक से मुक्त करने के लिए 'ऑपरेशन विजय' चलाकर इतना जोरदार पलटवार किया, जिसका पाक सैन्य रणनीतिकारों को सही अंदाजा नहीं था। कारगिल में भारतीय सैन्य संघर्ष के बरपते कहर के खौफ से पाक हुक्मरानों को अपने बचाव व बिना शर्त युद्ध विरामत तथा अमन की पैरोकारी के लिए अमरीका की शरण लेनी पड़ी। 14 मई 1999 से 26 जुलाई, 1999 तक चले इस युद्ध में भारतीय सेना के 527 रणबांकुरों ने

मातृभूमि की रक्षा के लिए शहादत का जाम पिया तथा 1363 सैनिक घायल हुए थे। तिरंगे में लिपट कर लौटे देश के इन 527 शहीदों में 52 सपूतों का संबंध हिमाचल से था, जिन्होंने कारगिल के पहाड़ों को अपने रक्त से सींचकर वीरगति को गले लगाकर भारत की विजय का पताका फहराने में निर्णायक भूमिका अदा की थी। राज्य के इन शहीदों में एक नाम हवलदार उधम सिंह पटयाल 18 ग्रनेडियर का भी है। इस जांबाज ने 13 जून, 1999 की रात को द्रास सैक्टर में 16 हजार फीट की उंचाई पर 'हंप' नाम के शिखर पर कब्जा जमाए बैठे दुश्मन से मुक्त कराने में अहम रोल अदा किया था।

इस शिखर पर आक्रामक सैन्य अभियान के दौरान अपने जवानों का नेतृत्व कर रहे उधम सिंह का सीना दुश्मन की भारी तादाद में हो रही फायरिंग में छलनी हो चुका था, लेकिन तिरंगे के समक्ष व साए में भारतीय सेना के हर सिपाही की शपथ, प्रतिबद्धता तथा राष्ट्र के प्रति समर्पण का जज्बा हमेशा दुश्मन पर भारी पड़ता है। इस जांबाज ने रक्त-रंजित होकर दुश्मन के कड़े प्रतिकार तथा गोलीबारी के बावजूद अपने बुलंद इरादों से दुश्मनों का सफाया करके उस मिशन को सफलतापूर्वक पूरा किया और शिखर अपनी शहादत देकर आजाद कराया था शिखर पर भारतीय सेना का कब्जा होने से इस क्षेत्र में सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण 5140 तथा अन्य शिखरों पर कब्जा कर लिए सेना को एक लांच पैड हासिल हुआ वीरगति को प्राप्त होने से पहले इस यो पाक सेना पर अपने पराक्रम से शौर्य लिखकर भारत की विजय सुनिश्चित कर निर्णायक भूमिका निभाई थी।

इस उच्च को कुशल युद्ध नेतृत्व क्षमता के प्रदर्शन निर्भीकता से मातृभूमि की रक्षा में जीव सर्वस्व बलिदान देकर शौर्य पराक्रम की परंपरा के निर्वाह के लिए भारत सरकार इन्हें 'वीर चक्र' मरणोपरांत से .....किया था।

कारगिल युद्ध में बिलासपुर के शहीद सात शूरवीरों में यह जिला के पहले शहीद इनकी शहादत 14 जून, 1999 को हुई थी युद्ध में अद्भुत वीरता के प्रदर्शन के लिए सरकार ने चार सैनिकों को सर्वोच्च पुरस्कार 'परमवीर चक्र' से नवाजा था, दो परमवीरों का संबंध भी देवभूमि से रहा है। इसके अलावा चार वीरचक्र तथा पांच मेडल भी राज्य के सैनिकों ने अपने नाम वीरभूमि को गौरवान्वित किया था। अंततः 26 जुलाई 1999 को भारतीय सेना ने कारगिल आखिरी चोटी पर तिरंगा फहराकर 'आए विजय' को आधिकारिक रूप से सफल कर दिया। हमारी सेना की आक्रामक नींव अदम्य साहस के आगे कारगिल क्षेत्र में सेना की पांव जमाने की जुर्रत नहीं हुई और अक्तूबर 1947 की तर्ज पर उसकी कश्मीर को हथियाने की मुराद पूरी हुई।

सभी युद्ध भारतीय सेना द्वारा पराजय का इतिहास पाक का पीछा करता आ रहा है। अतीत व हिमाकतों के लिए पाक की पुश्तें अपनी जमकर कोस रही हैं। इसलिए इस मुल्क ने छद्म युद्ध सहारा लेना शुरू कर दिया। बहरहाल इस में उच्च दर्जे के अनुशासन व कड़े प्रशिक्षण हासिल की गई सफलता के बाद दुनिया भारतीय सेना का रूतबा और उंचा हो गया। इसलिए देश के हुक्मरानो से आग्रह है कि अपने शौर्य से इतिहास लिखने वाले शहीदों के नाम की घोषणाएं, जो अधूरी हैं, उनकी तरफ ध्यान दें। रक्षा के लिए निडरता से अपना सर्वस्व निछावर करने वाले वीरों को पूरा देश शत्-शत् नमन करता है, और देश हमेशा उनके पराक्रम के लिए ऋणि रहेगा।

*मातृवन्दना पत्रिका में मई 2019 से मार्च 2020 के बीच छपे 'संपादक के नाम पत्र' की प्रति अपने पूर्ण पते के साथ मातृवन्दना संस्थान कार्यालय, डॉ0 हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 को 31 मार्च 2020 तक भेजें।*

## सूचना

*इस वर्ष मातृवन्दना संस्थान द्वारा, मातृवन्दना पत्रिका में स्तरीय लेख लिखने वाले लेखकों को पुरस्कृत करने की योजना बनी है। सम्बन्धित लेखकों को पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा।*

जिन्दगी मे पहली बार ऐसा स्कोर बोर्ड देखने को मिल रहा है भारत देश का, धन्य हो हिम दास तुम तो।।

12:50

| Rank | Nation | Gold | Silver | Bronze | Total |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | India (IND) | 10 | 9 | 5 | 24 |
| 2 | China (CHN) | 8 | 11 | 12 | 31 |
| 3 | United States (USA) | 5 | 4 | 1 | 10 |
| 4 | Russia (RUS) | 3 | 5 | 3 | 11 |
| 5 | Hungary (HUN) | 3 | 1 | 1 | 5 |
| 6 | Italy (ITA) | 2 | 2 | 4 | 8 |
| 7 | Australia (AUS) | 2 | 1 | 3 | 6 |
| 8 | Germany (GER) | 2 | 1 | 1 | 4 |
| 9 | Croatia (CRO) | 2 | 1 | 0 | 3 |
| 10 | Czech Republic (CZE) | 2 | 0 | 1 | 3 |
| 11 | South Korea (KOR) | 1 | 3 | 7 | 11 |
| 12 | France (FRA) | 1 | 1 | 1 | 3 |
| | Bulgaria (BUL) | 1 | 0 | 1 | 2 |

*With Best Compliments from:*

**SHIVALIK HOSPITAL**

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

**Dr. Akshay Sharma**

MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

**Dr. Anupma Sharma**

MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

**Facilities Available:** General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

गेयटी थियेटर शिमला में हिमगिरी कल्याण आश्रम के विवेकानंद छात्रावास मेहली के वार्षिकोत्सव में दीपप्रज्वलन करते हुए मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल, अ.भा. कार्य कारिणी सदस्य इंद्रेश कुमार व एसजेवीएन के सीएमडी नंद लाल शर्मा व अन्य

हिमाचल प्रदेश विश्व विद्यालय के ललित कला के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. नंद लाल शर्मा को केन्द्रीय ललित कला अकादमी द्वारा हिमाचल से नया सदस्य नियुक्त किया है।

मातृवन्दना संस्थान हि.प्र. द्वारा शिमला के फागली में वृक्षारोपण में संस्थान के पदाधिकारी व स्थानीय गणमान्य जन

**धर्मशाला में नारद जयंती पर गोष्ठी**

**विश्व संवाद केंद्र ने मीडिया मॉब लिंचिग व नारदीय पत्रकारिता पर किया मंथन**

**दिव्य हिमाचल ब्यूरो-धर्मशाला**

विश्व संवाद केंद्र धर्मशाला की ओर से नारद जंयती के उपलक्ष्य पर धर्मशाला में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय 'मीडिया, मॉब लिंचिग व नारदीय पत्रकारिता' रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के जिला कार्यवाह भूषण रैणा ने की।

समाचार एजेंसी पीटीआई के वरिष्ठ पत्रकार पीसी लोहमी कार्यक्रम के मुख्यातिथी के रूप मे उपस्थित रहे। जबकि हिमाचल प्रांत प्रचार प्रमुख महीधर प्रसाद विशिष्ट अतिथि रहे। कार्यक्रम की शुरुआत नारद ऋषी के चित्र पर पुष्प अर्पित करके हुई। इसके उपरांत कार्यक्रम के संयोजक अश्वनी भट्ट ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया व उन्हे शाल, टोपी व स्मृति चिंह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम संचालक डा. जय प्रकाश नारायण ने गोष्ठी के विषय की उपयोगिता व संदर्भो के विषय में विस्तार से वर्णन किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में भूषण रैणा ने वर्तमान समय मे पत्रकारिता की चुनौतियों पर बात करते हुए समाचारों की निष्पक्षता बनाए रखने पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि महीधर प्रसाद ने कार्यक्रम के उद्देश्य पर अपने विचार रखते हुए आदिपत्रकार नारद के चरित्र पर विस्तार से बात रखी। कार्यक्रम के मुख्यातिथी पीसी लोहमी ने पत्रकारिता के मूलभूत सिद्धांतों को बनाए रखते हुए सनसनीखेज पत्रकारिता से बचने की बात कही। उन्होंने वर्तमान समय मे सोशल मीडिया के दौर मे मानक समाचारों की उपयोगिता व निष्पक्ष पत्रकारिता के बिंदुओ पर विस्तार से चर्चा की। इस मौके पर मनोज कुमार, संजय मोगू, दिनेश भट्ट, अजय आचार्य, पवन कुमार, अनिल डोगरा, तपिष थापा, विजय शमशेर भंडारी, राजीव थापा, प्रदीप शर्मा, विजेंद्र चंदेल, संजय नरूला, जोगिंद्र कुमार, डा. श्रेया बक्षी, डा. आशीश नाग, कुमारी मोनिका, त्रिलोक शर्मा, डा. विशाल नैहरिया, रमन शर्मा व पवन शर्मा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

# 2022 तक पूर्णत: प्राकृतिक खेती राज्य के रूप में उभरेगा हिमाचल: आचार्य देवव्रत

पूर्व राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि वर्ष 2022 तक हिमाचल प्रदेश पूरी तरह से सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती को अपनाने वाले राज्य के रूप में देश भर में पहचान पाएगा। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में इसे हर किसान तक पहुंचाने के लिए अभी तक चार मेगा प्रोग्राम किए जा चुके हैं। इसके अलावा ब्लॉक और जिला स्तर पर किसानों को इस खेती विधि से जोड़ा जा रहा है। राज्यपाल ने कहा कि प्राकृतिक खेती पद्धति को आगे बढ़ाने के लिए पड़ोसी राज्य उत्तराखंड के साथ हाथ मिलाकर काम किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हाल ही में उन्होंने प्रधानमंत्री से भेंट की थी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी हिमाचल प्रदेश सरकार की ओर जहर मुक्त खेती के प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की है। ◆◆◆

# समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

RSNRS

## Rattan Singh Neja Ram & Sons

V.P.O. Reckong Peo, Tehsil Kalpa, Distt. Kinnaur (H.P.)
Email: mohanneg6969@gmail.com

Autorised Distributor:

SAMSUNG

**Mob.: 98165-00069, 98166-00069, 98167-00069**

RS NR

## Rattan Singh Neja Ram

**Autorised Distributor:**

V.P.O. Reckong Peo, Tehsil Kalpa, Distt. Kinnaur (H.P.)
Email: mohanneg6969@gmail.com

**Mob.: 98162-00069, 98163-00069, 98165-00069, 98166-00069**

समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

# हीरा लाल

## विधायक करसोग, मण्डी

## हिमाचल प्रदेश

## सपनों का घर

घर चाहे कैसा भी हो ,
उसके एक कोने में ,
खुल कर हंसने की जगह रखना ।
सूरज कितना भी दूर हो ,
उसको घर आने का रास्ता देना
कभी कभी छत पर चढ कर ,
तारे अवश्य गिनना ।
हो सके तो हाथ बढा कर ,
चांद छूने की कोशिश करना ।
अगर हो लोगों से मिलना-जुलना ,
तो घर के पास-पडोस जरूर रखना ।
भीगने देना बारिश में ,
उछल-कूद भी करने देना ,
हो सके तो बच्चों को ,
एक कागज की कश्ती चलाने देना ।
कभी हो फुरसत, आसमान भी साफ हो,
तो एक पतंग आसमान में चढाना ,
हो सके तो एक छोटा-सा पेच भी लडाना ।
घर के सामने रखना एक पेड ,
उस पर बैठे पक्षियों की ,
बातें अवश्य सुनना ।
घर चाहे कैसा भी हो ,
घर के एक कोने में
खुल कर हंसने की जगह रखना ।

**साभार: संस्कार बिन्दु, जून 2019**

## अपना राष्ट्र अपना गौरव'

सरहद पार हवा का झोंका
लगता सुंदर सलोना खुशनुमा
उधर बयार बताती
पनपता है वहां कितना
सुहावना मौसम,
संदेश लाती पवन
चल रहा शांति, समृद्धि हवन
न जाने क्यों नहीं भाता
धर्म, सियासत के सौदागरों को
हवा का उन्मुक्त बहना।
खेल जाते हैं भोले-भाले
इन्सान के जज्बातों से
पिला देते हैं जात-पात
मजहब, धर्म की घुट्टी
शबनम को बना देते हैं शोला
जिससे निकलते हैं
डाकू, आंतकवादी, उग्रवादी
बहती स्वच्छंद सुगन्धित
बन जाती है जहरीली
प्रदूषण मिश्रित पवना।
जिससे मरती है इन्सानियत
पनपता है भ्रष्टाचार
टूटते हैं दिल
होता है बहुत कुछ
क्यों न बताएं इन सौदागरों को
बदल सकता है हवा का रुख
तुम हो सकते हो नेस्तनाबूद
क्योंकि हो रही हैं कोशिशें
संस्कारित हवा बहाने की
इसलिए हवा को बहने दो
उन्मुक्त

**हीरा सिंह कौशल**
**गांव व डा0 महादेव तहसील**
**सुन्दर नगर जिला मंडी**

## गीतिका

उठो शीघ्र भुज अपने उठाओ।
सबक देश के दुश्मनों को सिखाओ।
लहू खौलता जा देश का जब,
खुली छूट सेना को देकर दिखाओ।
बहुत बह चुका रक्त निज सैनिकों का,
समय आ गया अब तो रोक लगाओ।
नहीं पाक का नाम बाकी रहे अब,
उसे विश्व नक्शे से ही अब मिटाओ।
सहेंगे नहीं वार अब मातृ-भू पर,
यही विश्व को कर दिखाओ।
अहिंसा की माला निरर्थक जपो मत,
तजो बंशी शस्त्र सब काम लाओ।
बहुत ले चुके धैर्य की जो परीक्षा,
नदी आज उनके लहू की बहाओ।

**सुरेन्द्रपाल वैद्य। पाल ब्रदर्स,**
**कालेज रोड, मण्डी-**

# कलयुग में भी चन्द्रमा पर जाने वाला प्रथम देश भारत

... -स्वामी सूर्यदेव

एक रहस्य से उद्घाटन अमेरिकन झूठ के सामने भारतीय सच,' चंद्रयान-2 रवाना हो गया,, समूचे राष्ट्र के लिए ये एक महत्वपूर्ण क्षण था,, उससे भी महत्वपूर्ण क्षण वह होगा जब यह यान कुछ दिनों बाद चंद्रमा पर उतरेगा, हर भारतीय चाहे वह देश में है या विदेश में,, सबके सर गर्व से उठे होंगे,' लेकिन इसी मामले में अमेरिका वैश्विक स्तर पर हंसी का पात्र बन गया था। बात उन दिनों की है जब रूस और अमेरिका में प्रतिस्पर्धा थी कि कौन पहले अंतरिक्ष में अपनी विजय की कहानी लिख दे, और फिर आया वह ऐतिहासिक दिन,' 21 जुलाई 1969 जब नील आर्मस्ट्रांग ने चांद पर पहला कदम रखा, और वहां अमेरिकन झंडा गाड़ दिया, असल में वह झंडा चांद पर कम रूस की छाती पर ज्यादा गाड़ा गया था, वे लोग अभी बधाइयां ले ही रहे थे विश्व भर से, तब तक वह बात फैल गई,,' कि 'असल में अमेरिकनों ने जो वीडियो डाला था झंडा गाड़ने का उसमें झंडा फहरा रहा था, तो पहली बात ये उठी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर की बिना वायुमंडल के फ्लैग फहरा कैसे रहा था?' अमेरिका के पास चुप रहने के अलावा कोई जवाब न था इसका,' 'फिर दूसरा सवाल उठा--नील आर्मस्ट्रांग जहां खड़ा था चंद्रमा पर वहां से एक तरफ उसकी छाया बन रही थी, तो उस समय जब छाया पूर्व की तरफ बन रही थी तो सूर्य पश्चिम में होना चाहिए, जबकि उस समय जिधर छाया बन रही थी वीडियो में,, असल में सूर्य भी उधर ही था, तो छाया सूर्य की तरफ कैसे बनी??' इस मजेदार वाकये ने उन्हें कहीं का न छोड़ा, उनका झूठ पकड़ा गया था, 'लेकिन तब तक तीसरा सवाल उठा--जिस तरफ छाया बन रही थी उस तरफ छाया की लंबाई को एक खास कोण पर सिर के ऊपर से सीधी रेखा में गुजारने पर वह मात्र 35 फिट दूर किसी बिंदु पर मिल रही थी जहां से प्रकाश आ रहा था,' 'जबकि सूर्य वहां से लाखों करोड़ों किलोमीटर दूर है, तो रोशनी इतनी नजदीक से कैसे आ रही थी? क्या कोई बड़ी लाइट लगाकर किसी स्टूडियो में चंद्रमा पर उतरने का वीडियो बनाया गया है?''ऐसे 32 सवाल उस समय उठाए गए थे जिसमें से एक का भी जवाब अमेरिका ने नहीं दिया था,'।

केलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के खगोल विज्ञान के प्रोफेसर माईकल रिच ने बयान दिया था कि असल में यह चंद्रमा अभियान राजनैतिक कारणों से जल्दबाजी में अंतरिक्ष में हमारा नियंत्रण है यह सिद्ध करने के लिए किया गया था,'। अभी कुछ दिन पहले रूस ने घोषणा की थी कि हम 2031 तक चंद्रमा तक पहुंच जाएंगे, ध्यान देना मेरे भाई, अभी और आज से 12 साल बाद, जबकि अमेरिका ने आज से 50 साल पहले एक झूठा दावा किया और बेइज्जती के शिकार हुए। भारत में यह बात क्यों नहीं पढ़ाई जाती हमारे बालकों को ये एक अलग विषय है। लेकिन पूरे विश्व में भारतीय मष्तिष्क का कोई तोड़ नहीं है,, हमें अपने वैज्ञानिकों की प्रज्ञा और काबिलियत पर कोई संदेह नहीं। अभी थोड़े दिन पहले एक पोस्ट पढ़ी जिसमें किसी भाई या बहन ने लिखा था कि भारत चांद पर जाने वाला चौथा देश बनेगा। मेरे भाइयों हम चंद्रमा पर जाने वाले प्रथम राष्ट्र होने जा रहे हैं, इस गौरव के क्षण के हम सब और समूचा विश्व गवाह होगा,,बहुत बहुत शुभकामनाएं मां भारती के सपूतों को। ◆◆◆

समस्त प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

रणबीर सिंह

जिला अध्यक्ष, भाजपा
मण्डी, हिमाचल प्रदेश

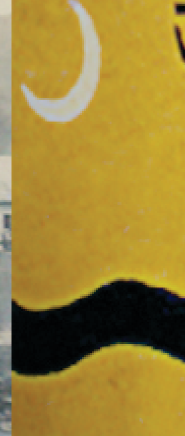

# तन्त्र

... -वासुदेव शर्मा

तन्त्र शब्द का एक अर्थ 'व्यवस्था' या 'सिस्टम' भी होता है। इस शब्द के साथ 'स्व' और 'पर' उपसर्ग जब जुड़ जाते हैं तो शब्द बनता है 'स्वतन्त्र' या 'परतन्त्र' एवं उपसर्ग के मेल में शब्द की सार्थकता और सहजता देखते ही बनती है। परन्तु पर उपसर्ग के मेल से शब्द की तासीर ही बदल जाती है एकदम मानवता के विरूद्ध और सभ्यता तथा संस्कृति के भी प्रतिकूल। किसी भी समाज या सभ्यता के सुचारू और विधिवत संचालन के लिए किसी न किसी तन्त्र या व्यवस्था की आवश्यकता रहती है। भारतवर्ष में आदिकाल से ही राजा, महाराजा और चक्रवर्ती सम्राट शासन व्यवस्था के संचालन रहे हैं। इतिहास में ऐसे बहुत से उदाहरण हैं कि राजा लोग अपनी प्रजा के बात-सुविधा के आकलन हेतु स्वयं वेश बदलकर प्रजा में जाते रहे हैं तथा और भी अनेकों तरह के सूचना तन्त्र प्रजा के हाल-चाल जानने के लिए अपनाए जाते रहे हैं। उस समय को शासन व्यवस्था में प्रजा स्वयं को सुरक्षित और संतुष्ट महसूस करती थी। शसक वर्ग भी प्रजा पालन में अपनी बेहतर व्यवस्थाएं देने को तत्पर रहता था। भगवान श्रीराम जी के शासन-काल में राजधानी के सुचारू निवर्हन का सर्वोत्तम उदाहरण है, राजा राम शासन व्यवस्था की कुशलता के बारे में कहते है- 'यदि प्रजातन्त्र की राह में यदि महारानी सीता भी यदि बाधक बनती है तो मैं प्रजा की प्रसन्नता के लिए देवी सीता को भी त्याग कर सकता हूं। भारतवर्ष में ऐसे त्यागी और धर्मात्मा चक्रवर्ती सम्राटों के परिश्रम से ही इस पुष्पधरा पर स्वर्ण युग जैसा कालखण्ड भी प्रजा ने देखा और भोगा है।

भारतभूमि को हिरण्यगर्भा और रत्न गर्भा आदि नामों से उच्चारित किया गया है। यह धनधान्य, सुख-सम्पति, अष्ट सिद्धि और नौनिधियों की प्रोतस्वि......... रही है। यहां के वैभवशाली विलास्तापूर्ण जीवन की लत और आपसी ईर्ष्या द्वेष के दुष्चक्र में फंसा तत्कालीन समाज और राजे रजवाड़े अपना सर्वस्व लुटने को बिधार्मी आक्रम्ताओं की गिरफ्त में फंसते चले गए। परिणाम स्वरूप यह भारतभूमि लगभग एक एक सहस्राब्दि के लम्बे काल खण्ड तक स्वतन्त्रता के लिए संघर्षशील रही। स्वतन्त्रता की बलिदानी पर देशभर में असंख्य क्रान्तिकारी ने प्राणोत्सर्ग किया। बलिदान की वह श्रृखंला छोटी बड़ी रजवाड़ा शाहियां वाले इस पहाड़ी क्षेत्र में भी अनवरत जारी रही। अत्यन्त दुर्गम भौगोलिक भूमि वाले इस प्रदेश के लोग ने राजा-राजाओं और अंग्रेज शासकों दोनों के साथ बड़ी वीरता पूर्वक लोहा प्रदेश की अन्य रियासतों की क्रान्तिकारी घटनाओं की तरह ही कहलूर रियासत में स्वतन्त्रता संग्राम की ज्वाला धधक रही थी। यहां भी प्रजा पर कई तरह के कहर ढाये जा रहे थे।

वर्तमान मध्यप्रदेश में बहने वाली बेतक नदी के किनारे की एक रियासत के राजा हरिचन्द ने सम्वत् 754 अर्थात् ईस्वी सन् 697 में कहलूर रियासत की स्थापना की थी। कहलूर नामक गांव को राजधानी बनाये जाने से रियायत का नाम ही कहलूर पड़ गया। सन् 1555 में राजा विक्रमचन्द ने कहलूर से बदलकर सुन्हाणी को राजधानी बनाया। लगभग 100 साल बाद राजा दीपचन्द ने सुन्हाणी से बदलकर वर्तमान बिलासपुर को राजधानी बनाया। इस समय पहाड़ी रियासतों पर मुगल सेनाओं के आक्रमण बढ़ गये थे। दुर्भाग्य से राजा दीपचन्द ने मुगल सेना का साथ दिया जिसका रियासत की प्रजा ने पुरजोर विरोध किया था।

बिलासपुर रियासत की प्रजा

सदा से ही वहां राजशाही के अत्याचारों के खिलाफ मुखर रही है। सबसे पहले राजा भीमचन्द जो गुरू गोविन्द सिंह के खिलाफ साजिश रच रहे थे, प्रजा ने उनका पुरजोर विरोध किया औ अपने राजा के बजाय गुरू जी का साथ दिया। राजा महाचंद बड़ा ही विलासी और अत्याचारी रहा उसका शासन ईसवी सन् 1779 से 1825 के मध्य रहा। वह अपने विलासी ठाठबाठ की पूर्ति हेतु मनमर्जी से प्रजा पर कर लगाता और धन भी ऐंठ लेता, फलस्वरूप प्रजा ने विद्रोह कर दिया राजा ने अपनी ही प्रजा को गोरखा सेना के अत्याचारों की आग में झोंक दिया। आगे चलकर महाचंद का ही पुत्र राजा खड्कचन्द गद्दी पर आसीन हुआ। वह अपने पूर्वज से बदतर अत्याचारी था उस समय एक अंग्रेज अधिकारी ने भी अपनी टिप्पणी में कहा था कि बिलासपुर रियासत में अत्याचारों की पराकाष्न है। बिलासपुर के रियासती इतिहास का सबसे कलेकित अध्याय राजा अमरचन्द सन् 1883 से 1888 का काल रहा है। जिसे इतिहासकारों ने झुग्गा आन्दोलन कहा है। राजा अमरचन्द बिलासिता की प्रतिमूर्ति था औ अपने इन दुर्गुणों की पूर्ति के लिए वह मनमाने ढंग से प्रजा को तंग करता रहता था। यदि प्रजा राजा के आदेशों की जरा भी अवहेलना करती तो राजा या तो मुगल सेना से अत्याचार करवाता या फिर अंग्रेजी शासन की सहायता लेता। ऐसे समय में प्रजा बिल्कुल असहाय और दयनीय अवस्था में थी। ऐसी स्थिति में रियासत की प्रजा चारों तरफ से विवश हो गई तो उसने एक अजीबों शक्ति तथा अत्यन्त हृदय विदारक तरीका अपनाया। राजा के अत्याचारों की कड़ी में अब भी शासन की ओर से कोई नया फरमान आता तो लोग रियासत के ब्राहमणों को आगे कर देते। वे अत्याचारों के विरोध स्वरूप घास फूंस की झोंपड़ियां अर्थात् झूग्गे बनाते और स्वयं को उनके अन्दर छुपा लेते। जैसे ही राजा के सिपाही उन्हें गिरफ्तार करने आते वे झुग्गों के अन्दर बैठे लोग झुग्गे में आग लगा देते और वहीं जलकर अपने प्राणों की आहुति दे देते। इस तरह के अग्निदाह में कोट, पनेहड़ा लल्वाहण तथा गेहड़वीं गांवों मे ब्राहमण अग्रणी थे।

सन् 1883 की झुग्गा अग्निदाह की घटना तो बड़ी ही हृदय विदारक थी। इसमें आन्दोलन कारियों ने अपना प्राणोंत्सर्ग तो किया ही साथ ही राजसेना को भी भारी नुकसान पहुंचाया। राजसेना का तहसीलदार जो प्रजा पर अत्याचार के आदेश दे रहा था, को गेहड़वीं गांव के पं. गुलाबाराम ने तहसीलदार को गोली मारकर उसका काम-तमाम कर दिया। रही कसर लोगों ने मृत तहसीलदार को उठाकर झुग्गों की आग के भेंट कर पूरी कर दी। बाद में रियासत से और पुलिसवालों ने आकर लोगों पर और अत्याचार किए। उसी समय लगभग कई ब्राहमण परिवार बिलासपुर रियासत छोड़कर कांगड़ा की ओर कूच कर गये। पं. गुलाबाचन्द को 6 साल की कैद की सजा सरियुन किला में करनी पड़ी। सन् 1930-31 राजा विजयचन्द के शासन काल में प्रजा शोधित रही। राजा के अत्याचारों का मुकाबला करने के लिए प्रजा ने डॉडश नाम से विरोध करना शुरू कर दिया जिसका मतलब होता है। शोर शराबा था हल्ला-गुल्ला करना अर्थात् राजशाही के आदेशों की खिल्ली उड़ाना। लेकिन शासन ने इसे दबाने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी।

जब वश नहीं चलता तो रियासत की सता पंजाब से पुलिस मंगवाती और इस तरह से प्रजा को डराती-धमकाती लेकिन यह डांडरा आंदोलन इतना कारगर सिद्ध हुआ कि राजा को अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करना पड़ा और उसने अपने पिता अमरचन्द के अत्याचारों से भी सीख लेकर पुत्राहित मे कुछ सुधारवादी कदम उठाने शुरू किए और प्रजा के सुख-सुविधा की ओर कुछ ध्यान दिया जाने लगा। इस प्रकार समस्त भारत की तरह रियासत बिलासपुर भी तत्कालीन शासकों वे अत्याचारों के विरोध में किसी से पीछे नहीं रही। बाद में राजशाही से लड़ते-लड़ते, अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ भी प्रजा ने कमर कसे रखी।

आज की वर्तमान पीढ़ी यदि स्वतन्त्र जीवन जीने और स्वतन्त्र विचरण की सुविधा भोग रही है तो यह हमारे उन क्रान्तिकारी वीरों के बलिदान की बदौलत ही है। हमें उनके प्रति कृतज्ञ रहने की हर समय शिक्षा लेते रहना चाहिए और आने वाली पीढ़ियों को यह स्मरण करवाये जाने का भरसक प्रयास करते रहना होगा किय यह स्वतन्त्रता ऐसे ही नहीं मिली है। लगभग एक हजार साल का कलंकित जीवन जीकर और असंख्य बलिदान देकर भी हम आज अपने देश और समाज की दशा और दिशा के प्रति उदासीन न रहें। हमने आजादी तो प्राप्त की परन्तु बहुत कुछ खोने के बाद यहां तक की भारतभूमि के टुकड़े होते भी हमने देखे। सो भावी भारत सशक्त भारत, समर्थ भारत और संगठित भारत की कल्पना सदा हमारे हृदयों में बनी रहे। ◆◆◆

# प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम व रजवाड़ाशाही का अंत

... -राजेश वर्मा

हिमाचल प्रदेश को वीरों की भूमि कहा जाता है इस वीरता का भी अपना इतिहास है चाहे स्वतंत्रता के बाद पड़ोसी देशों के साथ युद्धों में जान न्यौछावर करने वाले वीर सैनिकों की बात हो या स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले महानायकों की बात हो। प्रदेश के लोगों ने बढ़-चढ़ कर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया है। पहाड़ी राज्य में स्वतंत्रता संग्राम के किस्से बेहद खौफनाक हैं यहाँ मुद्दा केवल स्वतंत्रता ही नहीं था बल्कि रजवाड़ाशाही से भी छुटकारा पाना लोगों की प्राथमिकता थी मतलब लोग दो तरह से गुलामी की जंजीरों में जकड़े हुए थे एक रजवाड़ाशाही व दूसरी अंग्रेजी हुकूमत। अन्य राज्यों की तरह यहां भी आजादी से पहले रजवाड़ाशाही का बोलबाला था। राजाओं द्वारा लोगों का तरह-तरह से शोषण किया जा रहा था, एक तो गोरों के अत्याचार उपर से राजाओं के शोषण की मार प्रदेशवासी दोहरी प्रताड़ना सहन कर रहे थे दुख इस बात का था भले ही अंग्रेज तो बाहरी थे लेकिन राजा तो अपने होकर भी बेगानों से परे थे। 1845 में जब सिखों ने सतलुज पार कर ब्रिटिश राज्य पर आक्रमण किया तो वहां के राजाओं ने इस अवसर को अंग्रेजों के साथ अच्छे रिश्ते बनाने के लिए अंग्रेजों का साथ दे दिया। बहुत से शासक अंग्रेजों के लिए मुखबिरी तक करने लग गए।

पहाड़ी लोगों ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया बल्कि सामाजिक व राजनीतिक सुधारों के लिए स्थानीय शासकों के खिलाफ भी आवाज बुलंद की। प्रजामंडल द्वारा ब्रिटिश शासन का विरोधा भी इसी का उदाहरण था। पूरे देश में आजादी के लिए संघर्ष हो रहा था तो प्रदेश में इसके साथ विभिन्न रियासतों के शासकों के खिलाफ भी यह आंदोलन साथ-साथ चल रहा था। 1914-15 के दौरान मंडी में जो षडयंत्र हुआ था वह भी गदर पार्टी के प्रभाव में हुआ। सुकेत और मंडी रियासतों में क्रांतिकारियों द्वारा छिपकर सभाएं की गई जिसमें निर्णय लिया गया की अंग्रेज अधिकारियों के साथ-साथ राजा के वजीर व खासमखास दरबारियों की हत्या कर उनके खजाने को लूटा लिया जाए व विभिन्न पुलों को उड़ा देना भी इनकी योजनाओं में से एक था लेकिन योजनाएं सिरे चढ़ने से पहले ही उन क्रान्तिकारियों को पकड़ कर जेल में डाल दिया गया।

भारत छोड़ो आंदोलन से प्रभावित होकर एक आंदोलन सिरमौर रियासत में भी हुआ। जिसे पझौता आंदोलन के नाम से जाना जाता है, सिरमौर में बझेतू खढ के किनारों पर बसे पझौता क्षेत्र में सबसे पहले राजा के खिलाफ विरोध की चिंगारी उठी थी। इसी पझौता आंदोलन के महानायक वैद्य सूरत सिंह थे। पझौता आंदोलन भी भारत छोड़ो आंदोलन का एक हिस्सा रहा है, अंग्रेजी हुकूमत ने इस आंदोलन को कुचलने के लिए अपनी फौज को राजगढ़ भेजा जहां फौज ने सरोट नामक स्थान पर निहत्थे लोगों पर गोलियों की बरसात कर दी। इस नरसंहार की दोषी अकेले अंग्रेजी हुकूमत ही नहीं थी बल्कि स्थानीय राजाओं ने भी लोगों पर अत्याचार की सीमाएं लांघ दी। राजा के सैनिकों ने कली राम शावगी और वैद्य सूरत सिंह के मकानों को भी डाइनामइट से उड़ा दिया। बहुत से स्वतंत्रा सेनानी इस दौरान शहीद हुए व काफी संख्या में घायल भी हुए। वैद्य सूरत राम तो आजादी के बाद रिहा हुए। स्वतंत्रा संग्राम के इस संघर्ष में प्रदेश के लोग एक तरफ ब्रिटिश हुकूमत से तंग थे तो वहीं उन्हें अपनी-अपनी रियासतों के शासकों के अत्याचारों से भी तंग आ चुके थे । आजादी के इस संघर्ष में शिमला के धामी गोली काण्ड को कोई नहीं भुला पाया है। बेगार प्रथा को बंद करने और करों को खत्म करने के लिए 1938 में धामी प्रजामंडल की स्थापना की गई। यहां के शासक राणा के समक्ष अपनी मांगें को पूरा करवाने के लिए बहुत से लोग मैदान में एकत्रित हुए।

भागमल सौठा के नेतृत्व में 1939 में डेढ़ हजार के लगभग लोगों की भीड़ ने राणा के महलों की तरफ कूच किया। घनाहट्टी के नजदीक ही 16 जुलाई 1939 को भागमल सौठा को गिरफ्तार कर लिया गया। इससे उग्र हुई भीड़ राणा की तरफ चल पड़ी पुलिस द्वारा लाठीचार्ज चलता रहा परंतु क्रांतिकारी कहां रुकने वाले थे, राणा ने गोली चलाने का आदेश दे दिया जिससे दो व्यक्तियों उमा चन्द व दुर्गा दास को शहादत देनी पड़ी, सैकड़ों लोग घायल हो गए। पहाड़ी राज्य में इस तरह के गोलीकांड की गूंज दिल्ली तक सुनाई दी। यहीं से रजवाड़ाशाही के पतन की शुरुआत भी हो गई। अपनी बटालियन के विरोध के बावजूद व सिरमौर में नाबालिग राजा होने के चलते अन्य सहयोगी प्रशासकों ने अंग्रेजों से हाथ मिला लिया। बिलासपुर सहित कुछ अन्य शासकों ने भी अंग्रेजों का ही साथ दिया। मंडी में राजा विजय सेन के

नाबालिग होने के चलते व सुकेत रियासत में गृहयुद्ध के कारण क्रांतिकारियों को वह सहयोग नहीं मिल पाया जो मिलना चाहिए था हालांकि यहां के लोगों में देशभक्ति की भावना चरम सीमा पर थी। अपनी प्रजा व सैनिकों के विरोध के बावजूद चंबा के राजा श्री सिंह अंग्रेजों से कादारी निभाने लगे रहे। श्री सिंह ने 1857 की क्रांति के समय राज्य में सुरक्षा के बंदोबस्त चाक चौबंद कर दिए। इसी राजा ने डलहौजी व अन्य स्थानों में बसे अंग्रेजों को सुरक्षा मुहैया करवाई। जो स्वतंत्रता सेनानी पकड़े गए उन्हें जेल में बंद कर दिया गया। देश के पहले स्वतंत्रता संग्राम के लिए लगभग 50 देशभक्त फांसी के फंदे में झूल गए थे। यहां स्वतंत्रता के लिए यह क्रांति इस लिए भी मंद पड़ गई क्योंकि बहुत से देशी रियासत के शासकों के साथ-साथ महाराजा पटियाला ने भी अंग्रेजों का ही साथ दिया।

यह सब देखने सुनने से साफ पता चलता है कि हमारी रियासतों के राजाओं व शासकों ने क्रांतिकारियों का साथ देने की बजाए अंग्रेजों से कादारी इसलिए निभाई ताकि उनका राज पाट चलता रहे। प्रदेश की रियासतों के जहां ज्यादातर शासक अंग्रेजी सरकार का ही साथ दे रहे थे तो कुछेक शासक ऐसे भी थे जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता सेनानियों का जमकर साथ तो दिया ही साथ ही खुद भी आगे बढ़ कर कंपनी से लोहा लिया। ऐसा ही काम बुशहर के राजा शमशेर सिंह ने किया उन्होंने कंपनी को नजराने के तौर पर व अन्य तरह की दी जाने वाली सहायता को बंद कर दिया तथा क्रांतिकारियों का खुलकर सहयोग किया। सुजानपुर टीहरा के राजा प्रताप चंद ने तो क्रांति की तैयारी अपने ही किले में कर दी थी, दुर्भाग्य कहें या अपने ही लोगों द्वारा धोखा इस क्रांति की भनक जैसे ही अंग्रेजों को लगी उन्होंने राजा को इनके ही महल में ही नजरबंद कर दिया। अंग्रेजों की खिलाफत में कुल्लू के युवराज प्रताप सिंह के योगदान भी अतुलनीय रहा है, अंग्रेजों के खिलाफ उन्होंने खुलकर विद्रोह किया लेकिन अपने कुछ साथियों के पकड़े जाने के बाद उन्हें भी गिरफ्तार कर लिए गया और बाद में उनको अपने ही साथी बीर सिंह के साथ फांसी दे दी गई। इस घटना ने तो यहां की प्रजा में ऐसा असंतोष भरा दिया परिणाम स्वरूप जगह-जगह पर विद्रोह होने लग पड़ा कई लोगों को इसके लिए शहादत तक देनी पड़ी। अत्याचारों से तंग आकर आजादी को सर्वोपरि मानते हुए अन्य क्षेत्रों जिनमें जसवां, गुलेर, हरिपुर, नौदान, नूरपुर, पठानकोट सहित के लोग भी कंपनी के खिलाफ हो चुके थे।

वैसे देखा जाए तो प्रदेश के लोगों ने आजादी की दोहरी लड़ाई लड़ी है। पहाड़ी प्रदेश देश के साथ ब्रिटिश साम्राज्य से तो आजाद हुआ ही साथ ही विभिन्न शासकों की रजवाड़ाशाही से संघर्ष कर अपने लोकतांत्रिक हक पाए । एक तरफ कंपनी की मार थी तो दूसरी तरफ स्थानीय शासकों की गलत नीतियाँ। जब इन शासकों को प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम कर रहे महानायकों का साथ देना चाहिए था तो उस समय इन्होनें अंग्रेजों का साथ देकर अपने ही लोगों से धोखा किया और यह धोखा उस प्रजा से था जिसके दम पर इनका साम्राज्य टिका हुआ था। अंग्रेजों के बहकावे में आकर इन शासकों ने अपने ही प्रजा का शोषण किया यह सोच रहे थे की अंग्रेज इनको गद्दी से उतरने नहीं देंगे जबकि गोरों की नीति तो यह रही की एक शासक को दूसरे से लड़वाया जाए और जब एक खत्म हो तो दूसरे के बहाने उसके राज्य में अपनी हिस्सेदारी भी दर्ज कर दी जाए। आज प्रदेश जिस स्वतंत्रता व लोकतंत्र का आनंद भोग रहा है उसके लिए हम ऋणी हैं उन क्रांतिवीरों व महानायकों के जिनकी वजह से न केवल देश प्रदेश आजाद हुआ बल्कि रजवाड़ाशाही का भी अंत हुआ। ◆◆◆

## बड़प्पन

मायके आयी रमा, माँ को हैरानी से देख रही थी। माँ बड़े धयान से आज के अखबार के मुख पृष्ठ के पास दिन का खाना सजा रही थी। दाल, रोटी, सब्जी और रायता। फिर झट से फोटो खींच व्हाट्सएप करने लगीं।

षमाँ ये खाना खाने से पहले फोटो लेने का क्या शौक हो गया है आपको ?ष षअरे वो जतिन बेचारा, इतनी दूर रह हॉस्टल का खाना ही खा रहा है। कह रहा था की आप रोज लंच और डिनर के वक्त अपने खाने की तस्वीर भेज दिया करो उसे देख कर हॉस्टल का खाना खाने में आसानी रहती है। षक्या माँ लाड-प्यार में बिगाड़ रखा है तुमने उसे। वो कभी बड़ा भी होगा या बस ऐसी गलतू की जिद करने वाला बच्चा ही बना रहेगा !ष रमा ने शिकायत की। रमा ने खाना खाते ही झट से जतिन को फोन लगाया।

षजतिन माँ की ये क्या डङूटी लगा रखी है? इतनी दूर से भी माँ को तकलीफ दिए बिना तेरा दिन पूरा नहीं होता क्या ?ष षअरे नहीं दीदी ऐसा क्यों कह रही हो। मैं क्यों करूंगा माँ को परेशान ?ष षतो प्यारे भाई ये लंच और डिनर की रोज फोटो क्यों मंगवाते हो ? बहन की शिकायत सुन जतिन हंस पड़ा। फिर कुछ गंभीर स्वर में बोल पड़ा रू 'षदीदी पापा की मौत , तुम्हारी शादी और मेरे हॉस्टल जाने के बाद अब माँ अकेली ही तो रह गयी हैं। पिछली बार छुटियों में घर आया तो कामवाली आंटी ने बताया की वो किसी-किसी दिन कुछ भी नहीं बनाती। चाय के साथ ब्रेड खा लेती हैं या बस खिचड़ी। पूरे दिन अकेले उदास बैठी रहती हैं। तब उन्हें रोज ढंग का खाना खिलवाने का यही तरीका सूझा। मुझे फोटो भेजने के चक्कर में दो टाइम अच्छा खाना बनाती हैं। फिर खा भी लेती हैं और इस व्यस्तता के चलते ज्यादा उदास भी नहीं होती'। जवाब सुन रमा की आँखें छलक आयी। रूंधो गले से बस इतना बोल पायी।।। ◆◆◆

## प्रश्नोत्तरी

1. चन्द्रमा की सतह पर उतरने वाला प्रथम व्यक्ति कौन था?
2. प्रसिद्ध मृकुला देवी मंदिर कहां स्थित है?

## सन् 2100 यानी की आज से 81 साल बाद।'

- रितेश – हलो मम्मी। कैसी है आप?
- मम्मी: ठीक हूँ बेटा । तू बता अभी अमेरिका में धूप निकली की नहीं ?
- रितेश: नही मम्मी अभी कहाँ। करीब दो महीने तो हो ही गए। अभी तक अन्धेरा ही है और मौसम विभाग की भविष्यवाणी हुई है की अभी एक महीने और सूरज निकलने के आसार नही है।
- मम्मी: यहाँ भी स्थिति ठीक नही है। पिछले एक महीने से सूरज ढल ही नही रहा। 85 डिग्री सेल्सियस तापमान बना हुआ है। भयंकर पराबैंगनी किरणें फैली हुई हैं।।कल ही पडौस वाले जोशी जी का मांस पिघल कर गिरने लगा था। वो अभी भी ICU में भर्ती है
- रितेश: ओह तो क्या उन्होने अपने घर पे ओजोन कवर नही लगा रखा है क्या ?
- मम्मी: घर पर लगवा तो रखा है पर उनकी कार का ओजोन कवर थोड़ा पुराना हो गया था इसलिए। उसमे छेद हो गया और पराबैंगनी किरणे उनकी बॉडी से टच हो गई थी।
- रितेश: अच्छा मम्मी आपने सुना इधर एक बड़ी घटना हो गई।
- परसों अमेरिका के किसी कस्बे एक पौधा पाया गया। पूरी दुनिया भर के वैज्ञानिक वहाँ इकट्ठा हो गए काफी रिसर्च चल रही आखिर दुनिया में एक वनस्पति दिखाई देना बहुत बड़ी बात है।
- मम्मी: अच्छा बेटा तू टाईम से अपने भोजन के कैप्सूल तो लेता है ना? और हाँ वो पानी वाले कैप्सूल लेना मत भूलना वरना तेरी तबियत खराब हो जाएगी और टाईम से ऑक्सीजन का कैप्सूल भी लेते रहना बेटा तेरे पापा ने एक बार ऑक्सीजन लेने में लापरवाही कर दी थी, फेफड़े ही बदलवाने पड़ गए। तू तो जानता ही है कि अच्छे वाले फेफड़े कितने महंगे हो गए है।

## चुटकुले

*महिला :* मेरा वजन कैसे कम होगा?
*डॉक्टर :* अपनी गर्दन को दाएं बाए हिलाएं
*महिला :* कब?
*डॉक्टर :* जब कोई खाना खाने के लिए पूछे

चुनाव दो चरणों में होंगे
पहले वो आपके चरणों में होंगे
फिर आप उनके चरणों में होंगे

*टीचर :* इतने दिन कहाँ थे
*स्टूडेंट :* वर्ल्ड "़लू हो गया था
*टीचर :* पर यह तो वर्ड में होता है इंसानों में नहह्व
*स्टूडेंट (गुस्से में):* इंसान समझा ही कहाँ है आपने. रोज तो मुर्गा बना देते हो

आज कल के बच्चों को .....!!!!
सब याद रखने के लिए बादाम खाने के लिए दिए जाते हैं !!!!!

*Greetings from :*

# Himalayan Holidayers

(A travel management company)

1st Floor Dhroov Commercial Complex
(Vishal Megha Mart) Near D D Mehta Petrol
Pump Sanjauli,Shimla 171006
Toll Free 8080808696
Email :sales@himalayanholidayers.com

# FOUNDATION

RS
SINCE 1928

**PRESIDENT**
Hockey Mandi

**VICE PRESIDENT**
DBA Mandi (Badminton)

**TREASURER**
Hockey Himachal

**PRESIDENT**
SOCH Foundation Trust

**PRESS SECRETARY**
Swarankar Welfare Association Mandi

**EXECUTIVE MEMBER**
Himachal Pradesh State
Vyapar Mandal (regd.)

**MANAGING DIRECTOR**
Rattan Singh Saraf & Sons

Designed by NEW ERA, Shimla

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

*follow us on:* | | | YouTube | |

Posting Date:
1st & 5th of the Month